आकस्मिक धन-लाभ के योग

(लॉटरी, रेस, पितृ-धन मातृ-धन, ससुराल तथा अन्य सम्बन्धियों और विभिन्न स्रोतों से आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति के ग्रह-योगों से सम्बन्धित उपयोगी पुस्तक)

※

लेखक :

श्री भारतीय योगी

रचयिता—सरल अंक ज्योतिष, ज्योतिष और जन्म लग्न, प्रश्न ज्योतिष विज्ञान राशि ज्योतिष विज्ञान, स्वप्न ज्योतिष विज्ञान फलित ज्योतिष विज्ञान, भाग्य और आकृति विज्ञान आदि।

प्रकाशक

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, (वेदनगर) बरेली-२४३००३ (उ०प्र०)

फोन नं० ४२४२

दो शब्द

धन का मनुष्य जीवन में सर्वाधिक महत्व है। यदि धन की कमी हो तो पग-पग पर कठिनाइयाँ झेलनी होती हैं और बनते हुए कार्य बिगड़ जाते हैं। घर, परिवार, समाज तथा राज्य आदि में कहीं भी सम्मान नहीं मिल पाता।

सभी चाहते है कि धन के स्त्रोत विस्तृत हों तथा कहीं से, किसी भी प्रकार प्रर्याप्त परिमाण में धन की प्राप्ति हो सके। अनेक बार प्रयत्न कर करके बहुत-से व्यक्ति थक जाते है, किन्तु धन की आवश्यकता और आकांक्षा पूर्ण नहीं हो पाती।

आकस्मिक रुप से धनागम के स्त्रोत भी अनेक हो सकते हैं—लॉटरी, सटटा, रेस, माता-पिता का धन, अथवा ऐसे रिश्तेदारों का धन जिनका कोई अन्य वारिस न हो।

आकस्मिक धन-लाभ में अनेक प्रकार के लाभ हो सकते हैं—अचल सम्पत्ति (भवन, खेत, बगीचा आदि) तथा चल सम्पत्ति (रुपये, नोट, अशर्फी, आभूषण, रत्न वाहन आदि)। कौन नहीं चाहता कि यह सभी सुलभ हों ?

किन्तु भाग्य में होते हुए भी लोगों को यह जानकारी नहीं होती कि कब क्या मिलेगा ? अनेक व्यक्ति निराश जीवन व्यतीत करते और चाहते हैं कि इस प्रकार की जानकारी हों सकी। इसलिए ऐसी आवश्यकता अनुभव की गई कि इस विषय पर कोई उपयोगी पुस्तक प्रकाशित की जाय।

अतएव, इसी उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया गया हैं। हमें विश्वास हैं कि पाठकों के लिए यह पुस्तक अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

विषय-सूची

आकस्मिक धन-लाभ के योग

आकस्मिक धन के स्रोत

जीवन की अत्यावश्यक वस्तु धन

आकस्मिक लाभ का अर्थ है—सहसा प्राप्ति । जिसके विषय में कभी सोचा भी न हो, उस धन का प्रचुर परिमाण में प्राप्त हो जाना इस अभिप्राय की पूर्ति करता है ।

धन का मानव जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है इसके अभाव में पग-पग पर कठिनाइयाँ झेलनी होती है धन की कमी है तो राज्य समाज, परिवार कही भी सम्मान नहीं मिल पाता । सर्वत्र तिरस्कार ही सहना होता है । धन की कमी के कारण कभी-कभी आवश्यक कार्य भी रुक जाते हैं गृह-कलह, चिन्ता रोग आदि की उत्पत्ति में भी धन का अभाव, कभी-कभी एक प्रमुख कारण बन जाता है ।

इसीलिए, जिनके पास आवश्यक परिमाण मे धन है, वे भी यह चाहते हैं कि धनागम के स्रोत विस्तृत हों, उनकी बढ़े, आय जितना व्यय हो उससे अधिक आय तो होनी ही चाहिए । यदि ऐसा नहीं होता तो चिन्ता बढ़ जाती है ।

बड़े-बड़े धनवान भी धन की अभिलाषा करते है । सभी चाहते हैं कि कहीं से पर्याप्त धन की प्राप्ति हो एक साथ अधिक परिमाण में धन की प्राति सामान्य व्यापारादि के द्वारा तो कठिन ही होती है । हाँ, बड़े-बड़े व्यापारों और उद्योगों आदि की बात दूसरी है । जिन

कार्यों में लाखों रुपये फँसे पड़े हैं, उनमें एक अच्छी रकम मिल जाना तो सम्भव होता है, किन्तु ऐसा अवसर प्रायः उन्हीं धनवानों को प्राप्त होता है, जिनके पास वैसे साधन और सुविधाएँ उपलब्ध रहती है।

साहसा धन की प्राप्ति के मार्ग प्रचुर मात्रा में भरे हुए माल के मूल्यों में आकाश को छूने वाली तेजी के द्वारा हो सकती है। किन्तु किसी माल का बड़ा स्टाक कोई बड़ा धनिक ही कर सकता है, साधारण व्यापारी नहीं। इस उद्देश्य से एक नये प्रकार की सौदेबाजी चली। बिना माल के ही हजारों-लाखों की खरीद-बेच द्वारा (जिसे व्यापरिक सटठा कहते है) हजारों-लाखों के ही वारे-न्यारे हो जाते हैं। यह आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति का ही एक प्रकार है।

आकस्मिक रूप से धन लाभ का एक उपाय लॉटरी है, जो विदेशी शासन काल से ही चलती रही हैं। वर्तमान काल में तो विभिन्न राज्य सरकारें इन लॉटरियों को चलाती है और लोगों को बात की बात में लखपती बना देती हैं। इनके द्वारा विना आशा, बिना साधन, विना धन तथा बिना प्रयत्न के ही अनेक व्यक्ति मालदार होते जा रहे हैं।

कुछ व्यक्तियों के रिश्तेदारी भी आकस्मिक रूप से धन-लाभ में कारण बन जाते है। अनेक धनिक व्यक्ति, जिनके कोई सन्तान नहीं होंती, अपने निकटतम रिश्तेदार को अपने धन का उत्तराधिकारी बना जाते है। कुछ व्यक्ति तो लिखा-पढ़ी भी नहीं करते, तो भी कानूनी दाव-पेच जिन्हें उनका उत्तराधिकारी बना देते हैं, वे उनका धन प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

कहीं-कहीं तो यह देखा गया है कि वास्तविक उत्तराधिकारी अपना अधिकार नहीं पा सके और दूर के सम्बन्धी, जिनका अधिकार नहीं बनता था, अनधिकार चेष्टा और चालाकी से उस सम्पत्ति के स्वामी बन गये। जिस धन की उन्हें आशा ही नहीं थी, वह धन उन्हें आकस्मिक रूप से प्राप्त हो गया।

आकस्मिक धन प्राप्ति के कारण–

उक्त तथ्य एक बार कुछ आश्चर्य अवश्य उत्पन्न करते है । लोग कहते है कि प्रयत्न से सब कुछ सम्भव है । परन्तु अनेक व्यक्तियों को देखते है कि वे किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए जी तोड़ प्रयत्न करते हैं तो भी सफल नहीं हो पाते । इसके विपरीत अनेक व्यक्तियों को बिना प्र यास और विना कामना किये ही छप्पर फाड़कर धन बरसने जैसा सुयोग प्राप्त हो जाता है । तब सोचना होगा कि इसका प्रमुख कारण क्या हो सकता है ?

विद्वानों का मत है कि धन की प्राप्ति-अप्राप्ति में भाग्य सर्वोपरि है । यदि भाग्य में नहीं तो धन की आकस्मिक प्राप्ति का योग कदापि नहीं बनेगा । अनेक धनिकों को देखते हैं कि बाप-दादों के कमाये हुए अपार धन को भी गँवाकर भिखारी बन गये । उनके विषय में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने ऐश-आराम और आडम्बर के प्रदर्शन में धन का अपव्यय किया इसीलिए राजा से रंक बन गये ।

इससे यही मान्यता बनती है कि मनुष्य का भाग्य ही प्रधान है । किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि कोई व्यक्ति भाग्य के भरोसे बैठा रहकर प्रयत्न ही न करें । भाग्य का सहायक प्रयत्न और प्रयत्न का सहायक भाग्य होने से दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है ।

इसे इस प्रकार समझिये कि आप भूखे है, भोजन करना चाहते हैं, मन पसन्द खाद्य सामग्री भी थाल में परोसी हुई आगे रखी हैं, किन्तु मुख में तो तभी पहुँचेगी, जब हाथ से उठाकर मुख में डालेंगे । बिना मुख में डाले नहीं पहुँच सकती, तब अन्य कोई कार्य ही प्रयत्न के बिना कैसे सम्भव होगा ?

यह बात नहीं कि लोग भाग्य की इस सर्वोपरिता से अपरिचित हों वे न जानते हों कि भाग्य के बिना कोई कार्य सफल नहीं होता । किन्तु यह जानते हुए भी वे उसका उपाय करने में असमर्थ रहते हैं ।

वे यह समझने में भी असमर्थ रहते है कि उनके भाग्य का ऐसा निकृष्ट रूप क्यों बना ?

भाग्य निर्माण और कर्मों के प्रकार–

भाग्य के निर्माण में प्राणी के स्वकृत कर्म ही मुख्य कारण होते है। कर्म के तीन प्रकार प्रमुख है—(१) सञ्चित, (२) प्रारब्ध और (३) क्रियमाण। सञ्चित कर्म वे है जो अनेक जन्मो के भागों से अवशिष्ट रहकर एकत्र होते रहते है।

दूसरी प्रकार के कर्म (प्रारब्ध) वे है, जो पिछले जन्म में किये गये। उनका प्रमुख भोग इसी जन्म में करना होता है। वे कर्म शुभ है तो शुभ फल प्रदर्शित करेंगे और अशुभ हो तो उनका फल भी अशुभ ही होगा। शुभ फल का अर्थ सुख और अशुभ फल का दुःख होता है।

तीसरे प्रकार के (क्रियमाण) कर्म वे हैं, जो इस जन्म में किये जा रहे हैं। उनमें से कुछ साधारण प्रकार के कर्मो का फल तो अदृश्य रूप से इसी जन्म में भोग लिया जाता है, किन्तु असाधारण प्रकार के कर्म प्रारब्ध बनकर अगले जन्म मे भोगने के योग्य होते हैं। इसीलिए विद्वानों और ऋषि मुनियों ने मनुष्यों को सदैव शुभ कर्म करते रहने और पाप से बचते रहने का निर्देश दिया। सभी शास्त्र इसी तथ्य का प्रतिपादन करते है।

इस जन्म मे सुख-दुःख के प्रमुख कारण प्रारब्ध कर्म ही हैं, वे ही प्राणी के भाग्य का निर्माण करते हैं। पाप बन गया है तो दुःख भी उठाना ही होगा। 'बोये पेड़ बबूल के तो आम कहाँ से खाय' की लोकोक्ति यहाँ युक्तियुक्त ही है। किया हमने तो कोई और क्यों भोगेगा ? यहां तक कि किसी पुरूष के कर्मो का फल उसकी पत्नी या पुत्र आदि कोई भी नहीं भोगता। इसी प्रकार किसी स्त्री को भी अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल स्वयं ही भोगना होता है।

शुभ कर्म और भाग्य-परिवर्तन—

योगी तपस्वी आदि जो तपस्या करते हुए अनेक कष्ट उठाते है, वे कुछ मूर्ख तो नहीं है। वे कष्ट उठाकर अपने अशुभ कर्मों के फल का भोग करते है और भविष्य के लिए भी अशुभ कर्म नहीं होने देते। इसका फल यह होता हैं कि पाप कर्मो का क्षय स्वत: होता रहता। और उनका भाग्य उन्हें अभीष्ट की प्राप्ति में समर्थ बना देता है।

एक सन्त पुरूष के विषय में कहा जाता है कि वे अपने जीवन में दु:ख उठाने के लिए सदैव पहल किया कया करते। उनका मत था कि जितना ही कष्ठ उठा लूँगा, उतना ही प्रारब्ध को क्षीण करने में सफल रहूँगा। मेरा भाग्य इस उपाय से स्वत: ही उत्कृष्टता को प्राप्त होता जायगा। जिसके फलस्वरूप मुझे कभी किसी असंभावित कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा।'

एक अन्य महात्मा अपने घाव की चिकित्सा नहीं करते थे। उनका घाव सड़ जाता और उसमें कीड़े पड़ जाते तो उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। यदि घाव से कीड़े धरती में गिरते तो वे उन्हें उठा-उठाकर स्वयं ही पुन; घाव में डाल देते उनका मत था कि 'उन कीड़ों की खुराक घाव से बहने वाला रक्त और पीव ही है, इसलिए उन्हें उनका अहार मिलना ही चाहिए।

यह तो रही विशिष्ट सन्त-महात्माओं की बात, साधारण मनुष्य वैसा करने में असमर्थ है। उसे तो सांसारिक जीवन में सफल होने के लिए साधनं चाहिए, जो कि धन से ही सम्भवं हैं। तब यह जिज्ञासा उत्पन्न होना अनुचित नहीं है कि 'क्या मेरे भाग्य में धन-प्राप्ति का योग है ?' अथवा 'क्या मैं कभी आकस्मिक रूप से धन प्राप्त कर सकूँगा ? और यदि कर सकूँगा तो कब तक ?'

इन प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष के द्वारा प्राप्त हो सकता है। अगले पृष्ठों में इसी विषय पर समुचित रूप से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा। ★

द्वादश राशि विचार

बारह राशियाँ प्रसिद्ध हैं और ज्योतिष शास्त्र इन्हें क्रमपूर्वक इस प्रकार रखता है—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४)कर्क, (५)सिंह (६) कन्या, (७) तुला, (८)वृश्चिक, (९)धनु, (१०)मकर, (११)कुम्भ (१२) मीन।

इन राशियों को आकार भी दिये गये और सम्बन्धित राशि की प्रधानता वाले मनुष्यों पर उनके प्रभाव का भी निश्चय किया गया। राशियों के स्वरूप और प्रभाव निम्न प्रकार हैं—

राशियों के स्वरुप और प्रभाव--

(१) मेष राशि—मेंढ़ा जैसा आकार। ऋषियों ने आकाश के जिस भाग में मेढ़ा जैसा आकार देखा, उसे मेष नाम दे दिया। इस राशि की प्रधानता वाला मनुष्य कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य और साहस से कार्य लेता और कभी विचलित नहीं होता। वह सभी समस्याओं में स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने में समर्थ होता है। वैज्ञानिक कार्यों में उसकी अधिक रुचि होती है।

(२) वृष राशि—वृष या वृषभ का अर्थ है बैल। जिस आकाश भाग में ऐसी आकृति पाई, उसका नाम वृष रखा गया इस राशि की प्रधानता वाला मनुष्य आत्म विश्वास, लगन का सच्चा तथा अपने विचार के विरुद्ध किसी की भी नहीं सुनता। वह अपनी बात पर सदैव दृढ़ रहता है। यह जो कुछ कार्य करते हैं, पूर्ण रूप से विचार करने के बाद ही करते हैं।

(३) मिथुन राशि—मिथुन का अर्थ है जोड़ा। कुछ लोग इसका अभिप्राय मैथुन से लगाते हैं। राशि की प्रधानता वाला मनुष्य कुछ भोग-विलास प्रिय हो सकता है। इसके व्यक्तित्व में मोहकता होने के कारण सभी इसकी ओर आकर्षित होते है। यह कार्य में जल्दबाजी चाहते हैं। इनकी वाणी प्रभावोत्पादक होती है।

(४) कर्क राशि—कर्क का अर्थ है केकड़ा। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्य सहनशील होते हैं। वाणी में मधुरता तथा आचरण में नम्रता रहती है। शारीरिक श्रम से बचते, किन्तु मानसिक श्रम में पीछे नहीं रहते यह कभी सौभाग्यशाली और कभी भाग्य-हीन बन जाते हैं। इनके जीवन में उतार-चढ़ाव (अप्स एण्ड डाउनस) आते ही रहते हैं। व्यय के मामले में भींचू प्रवृत्ति के नहीं होते।

(५) सिंह राशि—सिंह का अभिप्राय तो स्पष्ट 'शेर' से ही है। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्यों का स्वभाव सिंह के समान क्रोधी होता है। यह झट ही प्रसन्न होते और झट रुष्ट हो जाते हैं। इनके स्वभाव की कठोरता के कारण इनके अनुयायियों की संख्या नहीं के समान होती है।

(६) कन्या राशि—इस राशि का आकार नाव पर बैठी हुई कन्या के समान है, जोकि हाथ में दीपक लिए हुए हैं। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्य शान्ति-प्रिय होते हैं। यह किसी से झगड़ा-झंझट पसन्द नहीं करते। इनमें भावना की प्रधानता रहती है।

(७) तुला राशि—तुला का अर्थ है तराजू। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्य सदैव न्याय-प्रिय रहते हैं। यह न किसी के साथ अन्याय करना चाहते हैं और न स्वय ही अन्याय पसन्द करते हैं। इनके स्वभाव में सत्यता का आधिक्य रहता हैं।

(८) वृश्चिक राशि—वृश्चिक अर्थ हैं बिच्छू। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्यों के स्वभाव में सौम्यता होती है। वे किसी का अनिष्ट नहीं करना चाहते। किन्तु यदि कोई उनको रुष्ट कर दे तो फिर वे बदला लेने से भी नहीं चूकते।

(९) धनु राशि—धनु का अर्थ धनुष ही है। इनमें घोड़े के समान निम्न भाग वाला मनुष्य धनुष पर बाण चढ़ाये हुए खड़ा दिखाई देता हैं। इस राशि की प्रधानता वाला मनुस्य किसी भी परिस्थिति के

मुकाबिले से नहीं घबराता। इसे धन से अधिक प्रेम होता है और यह अपने अधिकार को छोड़ना नहीं चाहता।

(१०) मकर राशि—मकर का अर्थ मत्स्य है। किन्तु इस राशि में नीचे का भाग मगर जैसा और ऊपर का भाग मृग जैसा अंकित हुआ है। इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्य सब प्रकार से चुस्त चालाक होते हैं। किस परिस्थिति मे क्या करना चाहिए अथवा किस से, कब, कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसकी जानकारी इन्हें ठीक प्रकार रहती है।

(११) कुम्भ राशि—कुम्भ का अर्थ है घड़ा। इस राशि के आकार में एक लम्बा-पतला मनुष्य अपने बाँये हाथ कुम्भ लिए हुए खड़ा दिखाई देता है तथा उसने अपना दाँया हाथ उसी कुम्भ पर रखा हुआ है। इस राशि की प्रधानता वाला मनुष्य सर्व रस (सामग्री) से सम्पन्न, किन्तु अपने भाग्य को स्वय ही ढके हुए होता है। यदि वह परिश्रम और विवेक बुद्धि से काम ले तो सौभाग्यशाली होना अधिक कठिन नहीं होगा।

(१२) मीन राशि—मीन का अर्थ है मछली। इसमें दो मछलियाँ विपरीत दिशाओ में तैरती हुई दिखाई देती है। कुछ मत में इनमें से एक नर और एक मादा है, जिसका अभिप्राय हुआ कि इस राशि की प्रधानता वाले मनुष्य अपने दाम्पत्य जीवन में सफल तो रहते हैं, किन्तु कभी-कभी पति-पत्नी के विचारों की विपरीतता अनबन का भी कारण बन जाती है। ऐसे मनुष्यों का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है और वे अपने कार्यों में चतुर होते हैं।

इस प्रकार राशियों का मनुष्यों से अभिन्न सम्बन्ध बनता है। इसी-लिए राशियों के अनुसार ही मनुष्यों के नामकरण होते हैं। किन्तु इन राशियों के निर्माण में नक्षत्रों का बहुत बड़ा योग रहता है। नक्षत्र सत्ताईस हैं और प्रत्येक राशि का निर्माण सवा दो नक्षत्रों के मिलने से होता है। इसलिए, विषय वस्तु को ठीक प्रकार से समझने के लिए उन नक्षत्रों के विषय में भी समझना होगा।

नक्षत्रों का वर्णन –

ऊपर बताया जा चुका है कि नक्षत्रों की संख्या २७ है। यथा–(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिर, (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुणी, (१२) उत्तराफाल्गुणी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तर षाढ़ा, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपदा, (२६) उत्तराभाद्रपदा और (२७) रेवती।

नक्षत्रों द्वारा राशि नि- ण–

अब यह देखिये कि नक्षत्र राशियों का निर्माण किस प्रकार करते हैं—

राशि	नक्षत्र चरण (सहित)
१. मेष	अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १
२. वृष	कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिर २
३. मिथुन	मृगशिर २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३
४. कर्क	पुनर्वसु १, पुष्य ३, आश्लेषा ४
५. सिंह	मघा ४, पूर्वा फा. ४, उत्तरा फा. १
६. कन्या	उत्तरा फा. ३, हस्त ४, चित्रा २
७. तुला	चित्रा २, स्वाति ४, विशाखा ३
८. वृश्चिक	विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४
९. धनु	मूल ४, पूर्वाषाढ़ा ४, उत्तराषाढ़ा १
१०. मकर	उत्तराषाढ़ा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २
११. कुम्भ	धनिष्ठा २, शतभिषा ४, पू. भाद्रपदा २
१२. मीन	पू. भाद्र २, उ० भाद्र ४, रेवती ४

नाम नक्षत्र एवं राशि–

नक्षत्र के अनुसार ही नामकरण होता है। प्रत्येक नक्षत्र में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण पर नाम का एक अक्षर निश्चित है। उक्त सत्ताईस के अतिरिक्त १ अभिजित् नक्षत्र और होता है। नक्षत्रानुसार नामों के प्रथम अक्षर यहाँ लिखे जाते हैं—

राशि	नक्षत्र	चरण	नाम का प्रथम अक्षर
(१) मेष	अश्विनी	४	चू, चे, चो, ला,
	भरणी	४	ली, लू, ले, लो,
	कृत्तिका	१	आ,
(२) वृष	कृत्तिका	३	ई, उ, ए,
	रोहिणी	४	ओ, वा, वी, वू,
	मृगशिर	२	वे, वो,
(३) मिथुन	मृगशिर	२	वे, वो,
	आर्द्रा	४	कू, घ, ङ, छ,
	पुनर्वसु	३	के, को, हो,
(४) कर्क	पुनर्वसु	१	ही,
	पुष्य	४	हू, हे, हो, डा,
	आश्लेषा	४	डी, डू, डे, डो,
(५) सिंह	मघा	४	मा, मी, मू, मे,
	पूर्वा फा	४	मो, टा, टी, टू,
	उ फा	१	टे,
(६) कन्या	उ. फा.	३	टो, पा, पी,
	हस्त	४	पू, ष, ण, ठ,
	चित्रा	२	पे, पो,
(७) तुला	चित्रा	२	रा, री
	स्वाति	४	रु, रे, रो, ता,

	विशाखा	३	ती, तू, ते,
(८) वृश्चिक	विशाखा	१	तो,
	अनुराधा	४	ना, नी, नू, ने,
	ज्येष्ठा	४	नो, या, यी, यू,
(९) धनु	मूल	४	ये, यो, भा, भी,
	पूर्वाषाढ़ा	४	भू, धा, फ, ढ,
	उत्तराषाढ़ा	१	भे,
(१०) मकर	उत्तराषाढ़ा	३	भो, जा, जी,
	श्रवण	४	खी, खू, खे, खो,
	धनिष्ठा	२	गा, गी,
(११) कुम्भ	धनिष्ठा	२	गू, गे,
	शतभिषा	४	गो, सा, सी, सू,
	पू. भाद्र.	३	से, सो, दा,
(१२) मीन	पू. भाद्र.	१	दी,
	उ. भाद्र.	४	दू, थ, झ, ञ,
	रेवती	४	दे, क्ष, चा, ची,

जिन लोगों को अपनी जन्म की तारीख या तिथि याद नहीं, वे अपने नाम के प्रथम अक्षर को सम्बन्धित नक्षत्र और राशि के साथ देख कर नक्षत्र और राशि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। राशि तथा नक्षत्र के जानने पर भी भाग्यादेश के निर्धारण में सहायता मिल जाती है।

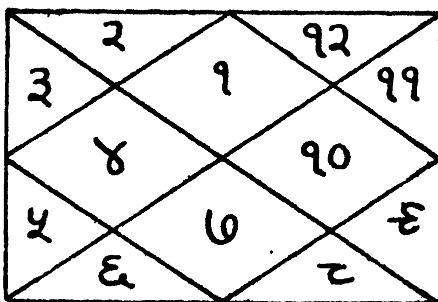
राशियों का क्रूर, सौम्य तथा चरादि भेद—

राशि	क्रूर-सौम्य	ह्रस्वदीर्घ	चरादि	बली
मेष	क्रूर	ह्रस्व	चर	रात्रिबली
वृष	सौम्य	ह्रस्व	स्थिर	रात्रिबली
मिथुन	क्रूर	सम	द्विस्वभाव	,,
कर्क	सौम्य	सम	चर	,,

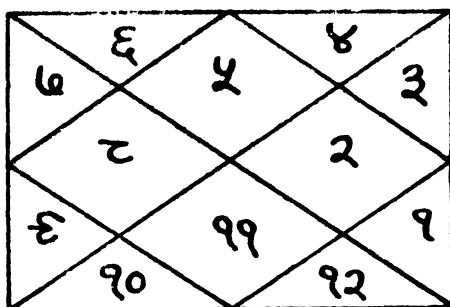
सिंह	क्रूर	दीर्घ	स्थिर	दिवाबली
कन्या	सौम्य	दीर्घ	द्विस्वभाव	,,
तुला	क्रूर	दीर्घ	चर	,,
वृश्चिक	सौम्य	दीर्घ	स्थिर	,,
धनु	क्रूर	सम	द्विस्वभाव	रात्रिबली
मकर	सौम्य	सम	चर	,,
कुम्भ	क्रूर	ह्रस्व	स्थिर	दिवाबली
मीन	सौम्य	सम	द्विस्वभाव	शीर्षोदय

जन्म कुण्डली के द्वादश भाव–

१२ राशियों के प्रतीक रूप जन्म कुण्डली में बारह घर बनाये जाते हैं, जो कि इस प्रकार है—



उक्त चित्र में जो गृह या भाव प्रदर्शित किये गए हैं, वे सभी कुण्डलियों में इसी क्रम से होते हैं। अभिप्राय यह है कि उक्त कुण्डली के भाव (खाने) में १ लिखा है उसमें १ के स्थान पर २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, में से कोई भी अंक क्यों न लिखा जाय, माना जायगा प्रथम भाव ही। इसे नीचे की कुण्डली से और भी स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है—



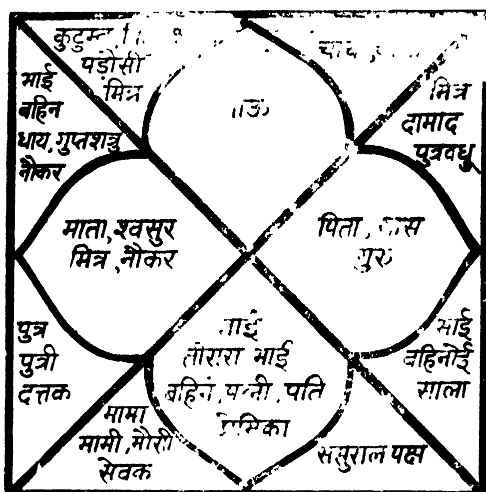
उक्त चित्र में जहाँ ५ का अंक लिखा है, वह खाना या घर पहला ही माना जायगा। जहाँ ३ लिखा है वह दूसरा, लिखा है वह तीसरा। इसी प्रकार अन्य खानों के विषय में भी समझिये। जहाँ ५ लिखा है, वह खाना लग्न भाव भी कहा जाता है।

उक्त खानो में लिखे गए अंक ही क्रमशः राशियों के प्रतीक हैं। जहाँ १ अंकित है, वह भाव (खाना) मेष राशि का है, २ लिखा है वह मेष राशि का, ३ लिखा है वह मिथुन राशि का, ४ लिखा है वह कर्क राशि का, ५ लिखा है वह सिंह राशि का, ६ लिखा है वह कन्या राशि का, ७ तुला राशि का, ८ वृश्चिक का, ९ धनु का, १० मकर का, ११ कुम्भ का और १२ मीन राशि का प्रतीक है।

भावों का रिश्तेदारों से सम्बन्ध—

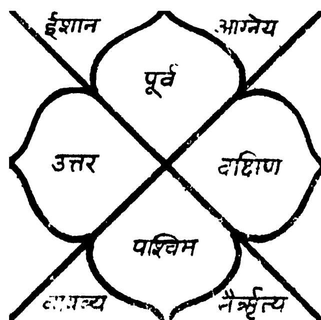
जन्म कुण्डली का प्रत्येक भाव किसी न किसी रिश्तेदार का प्रतीक है। किस भाव का किस रिश्तेदार से सम्बन्ध है यह आगे के चित्र से स्पष्ट है—

निम्न कुण्डली में वर्णित भावानुसार ही रिश्तेदारों से जातक का सम्पर्क बनता है। उदाहरणार्थ प्रथम भाव की प्रबलता ताऊ की सम्पत्ति प्राप्ति का सूचक हो सकता है। द्वितीय भाव प्रबल और शुभ हो तो कुटुम्बियों, पितृपक्ष के व्यक्तियों, पड़ौसियों या मित्रों के द्वारा धन प्राप्त



होना व्यक्त करता है। इसी प्रकार अन्य भावों के विषय में समझिये। अर्थात् जिस-जिस भाव में जिस-जिस सम्बन्धी के विषय में लिखा है। उसी-उसी सम्बन्धी से धन प्राप्त हो सकता है।

भावों का दिशाओं से सम्बन्ध—



सामने की कुण्डली चित्र यह स्पष्ट करता है कि किस भाव का किस दिशा से सम्बन्ध है। ध्यान रहे कि यदि किसी भाव के प्रबल ग्रह आकस्मिक लाभ कराते हैं, तो लाभ उस भाव से सम्बन्धित दिशा से ही होगा। अभिप्राय यह है कि जिस दिशा के भाव (खाने) में भाग्योदय कराने वाले ग्रह हों उसी दिशा में धन-लाभ का प्रयत्न करना चाहिये। मान लीजिए कि दशम

गृह प्रबल हैं तो उसमें वर्णित दिशा की स्टेट लाटरी खरीदना हितकर हो सकता है।

भावों के अधिपति

प्रत्येक भाव का अधिपति या स्वामी ग्रह होता है। यह भाव में विद्यमान राशि के अनुसार अपना आधिपत्य हैं। इनकी संज्ञाएं निम्न हैं--

१. प्रथम भाव—इसके स्वामी को प्रथमेश या लग्नेश कहते हैं।

२. द्वितीय भाव—इसका स्वामी द्वितीयेश या धनेश कहलाता है।

३. तृतीय भाव—इसका स्वामी तृतीयेश या भ्रातेश कहा जाता है।

४. चतुर्थ भाव—इसके स्वामी को चतुर्थेश या सुखेश कहते है।

५. पंचम भाव—इसका स्वामी पंचमेश या सुतेश कहाता है।

६. षष्ठ भाव—इसके स्वामी को षष्ठेश कहते हैं।

७. सप्तम भाव—इसका स्वामी सप्तमेश कहलाता है।

८. अष्टम भाव—इसका स्वामी अष्टमेश कहा जाता है।

९. नवम भाव—इसका स्वामी नवमेश या भाग्येश कहलाता है।

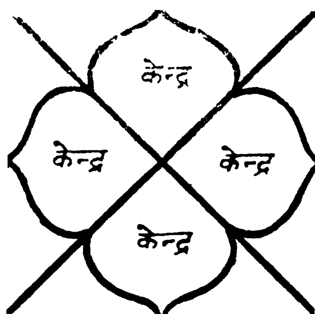
१०. दशम भाव—इसके स्वामी को कर्मेश, राज्येश या दशमेश कहते हैं।

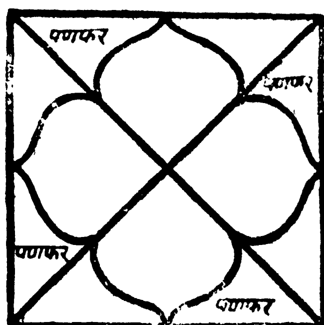
११. एकादश भाव-इसका स्वामी एकादेश, लाभेश या व्यापारेश कहलाता है।

१२. द्वादश भाव—इसका स्वामी द्वादशेश या व्ययेश कहा जाता है।

भावों की विशिष्ट संज्ञाएं

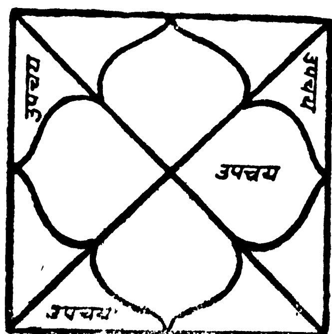
केन्द्र भाव—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव को केन्द्र' भाव कहते हैं।

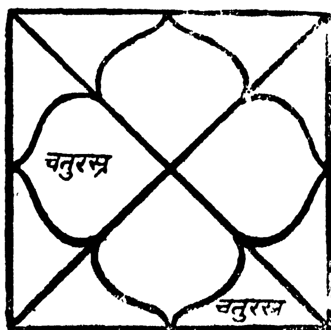




पणफर भाव—द्वितीय, पंचम, अष्टम और एकादश भाव 'पणफर' भाव कहलाते हैं।

उपचय भाव—तृतीय, षष्ठ, दशम और एकादश भाव 'उपचय' कहे जाते हैं।



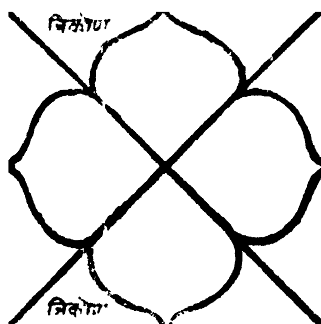


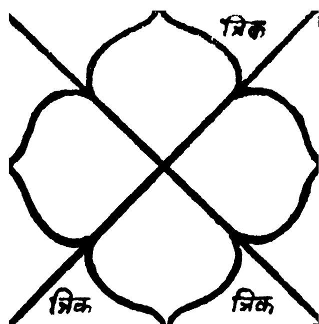
चतुरस्र भाव—चतुर्थ भाव और अष्टम दोनों को 'चतुरस्र' भाव कहते हैं।

त्रिकोण भाव—पंचम भाव और नवम भाव दोनों ही 'त्रिकोण' भाव कहलाते हैं।

त्रिक भाव—षष्ठ अष्टम और द्वादश भाव, तीनों त्रिक' भाव कहलाते हैं।

अपोक्लिम भाव—तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादश भाव 'अपोक्लिम' कहलाते हैं।

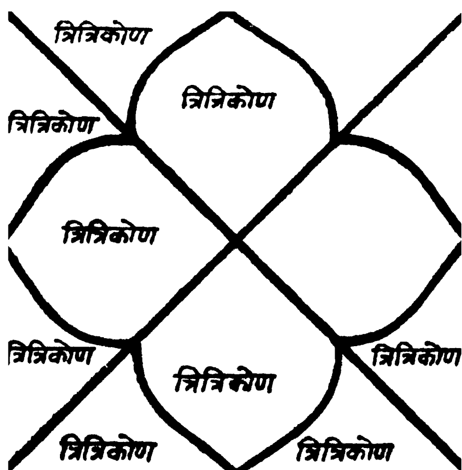




त्रिषडाय भाव—तृतीय, षष्ठ और एकादश, तीनों भाव 'त्रिषडाय' कहे जाते है।

लीन भाव—तृतीय, षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावों को 'लीन भाव' कहते है।

त्रित्रिकोण भाव—प्रथम से नवम भाव तक सभी भाव 'त्रित्रिकोण' कहलाते है।



आकस्मिक धन और ग्रह-योग

नवग्रह—

आकस्मिक धन प्राप्ति के योगों की खोज करने से पहले उन ग्रहों के विषय में जानकारी बहुत आवश्यक है, जो मनुष्य के प्रारब्ध के कार्यान्वियन में लगे रहते हैं।

ग्रह सामान्यत: नौ माने जाते हैं—(१) सूर्य (२) चन्द्र, (३) मंगल (४) बुध, (५) गुरु (६) शुक्र (७) शनि (८) राहु और (९) केतु। यह नौ ग्रह ही मनुष्यों के भाग्य के निर्णायक माने जाते हैं। इन्हीं की दशा महादशाएं का वर्षों तक अपना-अपना प्रभाव दिखाती हुई दु:ख सुख का कारण बनती है।

इन ग्रहों के समय के साथ अनन्य सम्बन्ध रहता है। वर्ष में ३६० दिन होते हैं। इनके विषय में अध्ययन की दृष्टि से आचार्यों ने बारह मासों के अनुसार बारह राशियो में विभाजित करके ३० बिन्दुओं की एक राशि निश्चित की। इस प्रकार यह बारह राशियाँ समूचे आकाश मण्डल का प्रतिनिधित्व करती है।

ग्रहों की स्वराँशि, उच्चराशि एवं नीच राशि—

ग्रह	स्वराशि	उच्चराशि	नीचराशि
सूर्य	सिंह	मेष	तुला
चन्द्र	वृष	वृष	वृश्चिक
मंगल	मेष	मकर	कर्क
बुध	कन्या	कन्या	मीन
गुरु	धनु	कर्क	मकर
शुक्र	तुला	मीन	कन्या
शनि	कुम्भ	तुला	मेष

राशियों के स्वामी आदि—

राशि	स्वामी (अधिपति)	बाधक राशि	बाधकग्रह
१. मेष	मंगल	कुम्भ	शनि
२. वृष	शुक्र	वृश्चिक	मंगल
३. मिथुन	बुध	सिंह	सूर्य
४. कर्क	चन्द्र	वृष	शुक्र
५. सिंह	सूर्य	कुम्भ	शनि
६. कन्या	बुध	वृश्चिक	मंगल
७. तुला	शुक्र	सिंह	सूर्य
८. वृश्चिक	मंगल	वृष	शुक्र
९. धनु	गुरु	कुम्भ	शनि
१०. मकर	शनि	वृश्चिक	मंगल
११. कुम्भ	शनि	सिंह	सूर्य
१२. मीन	गुरु	वृष	शुक्र

भावानुसार विशिष्ट तथा अनिष्टकारक ग्रह—

कारक ग्रहों का अत्यन्त महत्व माना जाता है। विशिष्ट कारक ग्रहों का सम्बन्धित भावों में होना विशेष रूप से शुभ फल देने वाला होता है। किन्तु अनिष्टकारक ग्रह सम्बन्धित भावों रहकर अशुभ फल दिखाते है। कौन ग्रह किस भाव में विशिष्टकारक रूप से और कौन ग्रह अनिष्टकारक रूप ये विद्यमान है? इसका वर्णन निम्न प्रकार है—

भाव	विशिष्टकारक ग्रह	अनिष्टकारक ग्रह
प्रथम	सूर्य	राहु
द्वितीय	गुरु	चन्द्र
तृतीय	मंगल	शुक्र
चतुर्थ	चन्द्र, बुध	बुध
पंचम	गुरु	गुरु

षष्ठ	शनि, मंगल	शुक्र
सप्तम	शुक्र	केतु
अष्टम	शनि	बुध
नवम	सूर्य, गुरु	सूर्य
दशम	सूर्य, बुध, गुरु, शनि	बुध
एकादश	गुरु	केतु
द्वादश	शनि	सूर्य, चन्द्र

अनिष्टदायक दोषों का निवारण--

यदि जन्म-कुण्डली में राहु अनिष्टकारक रूप से विद्यमान हो, किन्तु बुध विशेष फलदाता रूप से शुभ हो तो इन दोनों दोषों को दूर करने मे शनि समर्थ होता है।

यदि राहु, बुध और शनि तीनो अशुभ हों तो मंगल इनके अशुभ फल का निवारण कर देता है ।

यदि राहु, बुध, शनि और मंगल चारों अशुभ हों तो शुक्र इनके दोषों को नष्ट कर देता है। यदि राहु, बुध, शनि, मगल और शुक्र पाँचों ही अनिष्टकारी हों तो गुरु इनके कुप्रभाव को दूर कर देगा।

यदि कुण्डली में सूर्य की स्थिति अधिक बलवती हो वह अन्य सभी ग्रहों के अशुभ प्रभाव को नष्ट करने में पूर्ण समर्थ है।

ग्रहों की बल-वृद्धि—

दो ग्रहों के साथ रहने पर कुछ ग्रहों की परस्पर बल-वृद्धि हो जाती है, उसे इस प्रकार समझिये—

(१) सूर्य के साथ शनि का बल बढ़ जाता है।

(२) शनि के साथ मंगल का बल बढ़ता है।

(३) मंगल के साथ गुरु की बल-वृद्धि होती है।

(४) गुरु के साथ चन्द्रमा का बल बढ़ जाता है।
(५) चन्द्रमा के साथ शुक्र का बल बढ़ता है।
(६) शुक्र के साथ बुध हो तो उसकी बल वृद्धि होती है।
(७) बुध के साथ चन्द्रमा की बल वृद्धि होती है।

ग्रहों की पारस्परिक मित्रता, शत्रुता आदि—

ग्रहों में भी प्राणियों के समान मित्रता, शत्रुता, समता (उदासीनता) आदि की विद्यमानता रहती है। उसका वर्णन आवश्यक समझ कर यहाँ किया जा रहा है—

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मगल, गुरु	शुक्र	बुध
चन्द्र	सूर्य	शनि	मं० गु०
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	शनि	शु० बु०
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	म० गु० श०
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	बुध, शनि	सूर्य	मंगल
शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र	गुरु

ग्रहों की दृष्टि—

सभी ग्रहो की सातवीं दृष्टि मानी जाती है। शनि, गुरु, मंगल की सातवीं के अति विशेष दृष्टियाँ भी हैं। शनि की तीसरी और दसवीं गुरु की पाँचवीं और नवमी तथा मगल की चौथी और आठवीं दृष्टियाँ भी होती है।

जिस भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, उसका शुभ फल और अशुभ दृष्टि हो उसका अशुभ फल प्राप्त होता है। जहाँ दो ग्रह हों वहाँ एक शुभ एक अशुभ हो तो शुभाशुभ मिलेगा। यदि दोनों ग्रह शुभ हैं, तो अधिक शुभ और दोनों अशुभ हैं तो अशुभ फल दिखायेंगे।

जो ग्रह जिस भाव में बैठा हो, उसका फल तो देता ही है, जिस भाव को देखता है, उसका फल भी देता है।

ग्रहों की महादशा-अन्तर्दशा

ग्रहों की महादशाओं और अन्तर्दशाओं का मानव जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव रहता है। सूर्य की महादशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १० वर्ष, मंगल की ७ वर्ष, राहु की १८ वर्ष, गुरु की १६ वर्ष, शनि की १९ वर्ष, बुध की २७ वर्ष केतु की ७ वर्ष और शुक्र की २० वर्ष होती है। इनमें अन्तर्दशाएं निम्न प्रकार होती हैं—

सूर्य की महादशा ६ वर्ष—

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
सूर्य	०	०३	१८
चन्द्र	०	०६	००
मंगल	०	०४	०६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	०९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	०६
केतु	०	०४	०६
शुक्र	१	००	००
योग	६	००	००

चन्द्र की महादशा १० वर्ष—

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
चन्द्र	०	१०	००

मंगल	०	०७	००
राहु	१	०६	००
गुरु	१	०४	००
शनि	१	०७	००
बुध	१	०५	००
केतु	०	०७	००
शुक्र	१	०८	००
सूर्य	०	०६	००
योग	१०	००	००

मंगल की महादशा ७ वर्ष—

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
मंगल	०	०४	२७
राहु	१	००	१८
गुरु	०	११	०६
शनि	१	०१	०९
बुध	०	११	२७
केतु	०	०४	२७
शुक्र	१	०२	००
सूर्य	०	०४	०६
चन्द्र	०	०७	००
योग	७	००	००

राहु की महादशा १८ वर्ष—

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
राहु	२	०८	१२
गुरु	२	०४	२४
शनि	२	१०	०६
बुध	२	०६	१८

केतु	१	००	१८
शुक्र	३	००	००
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	०६	००
मंगल	१	००	१८
योग	१८	००	००

गुरु की महादशा १६ वर्ष--

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
गुरु	२	०१	१८
शनि	२	०६	१२
बुध	२	०३	०६
केतु	०	११	०६
शुक्र	२	०८	००
सूर्य	०	०९	१८
चन्द्र	१	०४	००
मंगल	०	११	०६
राहु	२	०४	२४
योग	१६	००	००

शनि की महादशा १९ वर्ष—

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिवस
शनि	३	००	०३
बुध	२	०८	०९
केतु	१	०१	०९
शुक्र	६	०२	००
सूर्य	०	११	१२
चन्द्र	१	०७	००
मंगल	१	०१	०९
राहु	२	१०	०६

गुरु	२	०६	१२
योग	१९	००	००

बुध की महादशा १७ वर्ष—

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
बुध	२	०४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	००
सूर्य	०	१०	०६
चन्द्र	१	०५	००
मंगल	०	११	२७
राहु	२	०६	१८
गुरु	२	०३	०६
शनि	२	०८	०९
योग	१७	००	००

केतु की महादशा ७ वर्ष—

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
केतु	०	०४	२७
शुक्र	१	०२	००
सूर्य	०	०४	०६
चन्द्र	०	०७	००
मंगल	०	०४	२७
राहु	१	००	१८
गुरु	०	११	०६
शनि	१	०१	०९
बुध	०	११	२७
योग	७	००	००

शुक्र की महादशा २० वर्ष—

अन्तर्दशाएं	वर्ष	मास	दिवस
शुक्र	३	०४	००
सूर्य	१	००	००
चन्द्र	१	०८	००
मंगल	१	०२	००
राहु	३	००	००
गुरु	२	०८	००
शनि	३	०२	००
बुध	२	१०	००
केतु	१	०२	००
योग	२०	००	००

जन्म नक्षत्रानुसार महादशा का आरम्भ होता है। अर्थात जातक के जन्म का जो नक्षत्र हो, उससे सम्बन्धित महादशा से उसका जीवन प्रारम्भ होता है। उदाहरणार्थ समझिये कि यदि किसी का जन्म रेवती नक्षत्र में हुआ है तो उस समय बुध की महादशा मानी जायगी और वह मनुष्य १७ वर्ष तक बुध की महादशा भोगने के बाद ७ वर्ष तक केतु की २० वर्ष तक शुक्र की और फिर ६ वर्ष तक सूर्य की महादशा भोगेगा, उससे आगे भी क्रमशः चन्द्रमा, मंगल, राहु की दशा उसे भोगनी होगी। किस नक्षत्र के समय कौन-सी महादशा रहती है, यह नीचे की तालिका से सहज ही ज्ञात हो जाता है।

महादशा	नक्षत्र
केतु—	अश्विनी, मघा, मूल
शुक्र—	भरणी, पूर्वाफाल्गुणी, पूर्वाषाढा
सूर्य—	कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा
चंद्र—	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा

राहु—आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा
गुरु–पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा
शनि—पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपदा
बुध—आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

इस प्रकार महादशा-काल और उसके प्रभाव तथा अन्तर्दशा आदि का ज्ञान जातक का भाग्य समझाने के लिए बहुत आवश्यक होता है क्योंकि इसका अध्ययन किये बिना किसी भी प्रकार का निर्णय किया जाना सम्भव नही होता

महादशाओं का निर्णय करने के लिए जिस ग्रह की दशा हो उसका बल, उसकी विभिन्न राशियों पर स्थिति तथा भावानुसार स्थिति और प्रभाव का अध्ययन भी बहुत आवश्यक होता है।

अन्तर्दशाएँ भी अपना महत्व कुछ कम नही रखती। अनेक बार महादशा से अन्तर्दशा अधिक प्रभावकारी और शीघ्रकारी सिद्ध होती है। यदि अन्तर्दशा प्रबल और महादशा का ग्रह निर्बल है तो अन्तर्दशा अधिक प्रभाव दिखायेगी और महादशा का फल भी अन्तर्दशा के बलानुसार ही न्यूनाधिक रहेगा।

इसलिये उक्त तथ्यों को भले प्रकार समझकर ही फलादेश का निश्चय किया जाना चाहिए। सरसरी तौर पर किया जाने वाला अध्ययन फलादेश के निर्धारण में सफल नही हो पाता और उसके फल स्वरूप फलादेश प्रायः ठीक नही बैठ पाता।

अगले पृष्ठों मे इस विषय पर पर्याप्त विचार किया है और यह चेष्टा की गई है कि अध्ययनकर्त्ता का अध्ययन-मार्ग सरल हो सके।

महादशाओं के प्रभाव

महादशाओं के आकस्मिक लाभ विषयक सिद्धान्त-

महादशाओं के भोग काल का वर्णन किया जा चुका हैं, उनके सम्बन्ध में सामान्य नियम यह है—

(१) उच्च राशिस्थ, स्वराशिस्थ और मित्र राशिस्थ ग्रह सदैव शुभ फल देने वाले होते हैं, किन्तु वे अशुभ युक्त या अशुभ द्रष्ट नहीं होने चाहिए। केन्द्र त्रिकोण या स्वकीय षड्वर्ग में स्थित ग्रह भी शुभ होते है। सभी ग्रहों की महादशायें और अन्तर्दशायें भी इसी प्रकार सूर्य सानिध्य से अस्त न हों तथा पाप ग्रह उन ग्रहों को न देखते हों, तभी शुभ फल देने वाली होती है।

(२) किन्तु उच्च राशिस्थ, स्वराशिस्थ या मित्र राशिस्थ ग्रह भी यदि नीचे या नीच के नवास में हो, अथवा नीच शत्रू राशिस्थ या स्वमित्र के नवांन में स्थिति हों तो वे शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का अर्थात मिश्रित फल प्राप्त कराते हैं।

(३) दूसरे तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में विद्यमान शुभ ग्रह जातक के बाल्यकाल में धन प्राप्त में सहायक होते हैं। किन्तु यदि इन भावों में पापग्रह हों तो उनके कारण धनादि का योग जातक की अन्तिम अवस्था में बनेगा।

(४ आरोहिणी दशा में जातक को आकस्मिक धन लाभ-सहित सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। यह दशा तब बनती है, जबकि अपनी नीच राशि से आगे छः राशि तक सभी ग्रहों की विद्यमानता रहे, अन्यथा नहीं।

(५) इसके विपरीत, अवरोहिणी दशा अशुभ फल देने वाली होती है। जब अपनी उच्च राशि से आगे छँ राशि तक सभी ग्रह स्थित रहे, तब 'अवरोहिणी दशा' बनी समझिये।

(६) यदि वृहस्पति की स्थिति लग्न भाव या लग्न से तीसरे भाव में हों तो जातक पर्याप्त मात्रा मे सहसा धन की प्राप्ति का सुयोग प्राप्त करता है।

(७) यदि वृहस्पति की स्थिति दशम भाव अथवा ग्याहरवें भाव में हों तो इसे भी धन प्राप्त कराने वाला एक सुयोग ही कहा जा सकता है।

(८) यदि वृहस्पति अपनी उच्च राशि मे विद्यमान हो तो यह स्थिति भी बहुत शुभ समझी जाती है। जातक इसके प्रभाव में सहसा धन पाने में सफल होता है।

सूर्य महादशा का प्रभाव-

महादशा मे सूर्य पूर्ण रूप से बलवान हो तो आकस्मिक धन-लाभ का अवसर प्राप्त करा सकता है। मध्यम बली होने पर अल्प मात्रा में धन मिलेगा। किन्तु हीनबल वाला सूर्य हानिकारक और अशुभ फल देने वाला होता है।

विभिन्न राशियों पर सूर्य महा दशा का धनदायक प्रभाव

मेष राशि—जन्म कुण्डली में सूर्य की स्थिति मेष राशि पर हो तो धन-लाभ में सहायक होगा।

मिथुन राशि मिथुन राशिस्थ सूर्य सामान्य धन की प्राप्ति करायेगा।

कर्क राशि—कर्कराशिस्थ सूर्य राज पुरस्कार तथा अन्य प्रकार से धन प्राप्त कराने वाला होगा।

सिंह राशि—सिंह राशिस्थ सूर्य भी लाभकारी होता है।

धनु राशि—यदि सूर्य की स्थिति धनु राशि पर हो तो अत्यन्त लाभदायक होगा।

मीन राशि—यदि सूर्य मीन राशि पर है तो यह स्त्री धन की प्राप्ति में सहायक है।

चन्द्र महादशा का प्रभाव–

चन्द्रमा भी अपनी दशा में पूर्ण बली हो तो अधिक लाभ मध्यम बली हो तो कुछ कम लाभ और हीनबली हो तो हानिकारक होता हैं ।

विभिन्न राशियों पर चन्द्र महादशा का धनदायक प्रभाव

वृष राशि—यदि चन्द्रमा वृष राशि पर हो तो पर्याप्त धन प्राप्त करायेगा है । मूल त्रिकोणस्थ हो तो क्रय-विक्रय में आशातीत लाभ द्वारा धनागम के स्रोत्र खोलता है ।

कर्क राशि—कर्क राशिस्थ चन्द्रमा मकान आदि स्थावर सम्पत्ति का सहसा लाभ कराता है ।

सिंह राशि—सिंह राशिस्थ चन्द्रमा राज द्वारा या अन्य स्रोत्रों से धन प्राप्त कराता है ।

धनु राशि—यदि चन्द्रमा धनु राशि पर हो तो धन प्राप्ति मे सहायक होता है ।

मकर राशि—मकर राशिस्थ चन्द्रमा भी धन लाभ का योग बनाता है ।

मंगल महादशा का प्रभाव–

पूर्ण बल मंगल अनेक प्रकार से धन-लाभ में कारण होता है । मध्यम बल मध्यम धन-लाभ कराता है । किन्तु हीनबल मंगल सदैव हानिकारक होता है ।

विभिन्न राशियों पर मंगल महादशा का धनप्रद प्रभाव

मेष राशि—मेष राशि पर विद्यमान मंगल धन-लाभ मे सहायक होता है ।

कर्क राशि—कर्क राशिस्थ मंगल भी धन-लाभ कराता है ।

सिंह राशि—सिंह राशि पर मंगल की स्थिति प्रचुर धन की प्राप्ति कराती है ।

कन्या राशि—कन्या राशिस्थ मंगल बिलम्ब मे धन प्राप्ति कारण होता है।

धनु राशि—धनु राशिस्थ मंगल राज सम्मान और सहसा धन प्राप्ति योग बनाता है।

मकर राशि—मंगल मकर राशि पर हो तो अपार धन का लाभ कराता है।

राहु महादशा का प्रभाव–

राहु की महादशा कष्टकार मानी जाती है, फिर भी यदि वह शुभ हो तो शुभ फल दिखाने वाली होती है। अशुभ महादशा कष्टकारी तथा अशुभ होती है।

मेष राशि—मेष राशिस्थ राहु धन-लाभ कराता है।

वृष राशि–इस राशि मे राहु की स्थिति राज्य से लाभ कराती है।

मिथुन राशि–इस राशि में स्थिति राहु जातक को मध्य आयु में लाभदायक होतीं है।

कर्क राशि—इस राशि मे स्थिति राहु धन का सहसा लाभ कराता है।

धनु राशि–धनु राशिस्थ राहु जातक को पर्याप्त लाभ कराता है।

गुरु महादशा का प्रभाव–

पूर्णबली गुरु राज्य-पुरस्कार, राज्य लाटरी तथा अन्य स्रोतो से धन प्राप्त कराने वाला होता है। मध्यम बली सामान्य लाभ का योग बनाता है, जबकि हीन बली को अशुभ फल देने वाला समझिये।

बिभिन्न राशियों पर गुरु के धनप्रद योग=

मेष राशि—मेष राशिस्थ वृहस्पति भाग्योदय में कारण होता है।

कर्क राशि—कर्क राशिस्थ गुरु राज्य-पुरस्कार या लॉटरी आदि की प्राप्ति कराता है।

सिंह राशि—सिंह राशिस्थ गुरु भी धन लाभ में सहायक होता है।

वृश्चिक राशि—वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु अत्यन्त उत्कर्ष की प्राप्ति कराता है।

धनु राशि—इस राशि में गुरु की स्थिति धन सम्मान दोनों प्राप्त कराती है।

कुम्भ राशि—इस राशि में उक्त फल।

मीन राशि—सामान्य किन्तु सहसा धन-लाभ।

शनि महादशा का प्रभाव—

पूर्ण बल शनि जातक को सब प्रकार के सुख तथा धनादि की प्राप्ति में सहायक होता है। मध्यम बल शनि भी विवेक तो उत्पन्न करता ही है। किन्तु हीनबल हानिकारक होता है।

विभिन्न राशियों पर शनि के धनप्रद योग—

मिथुन राशि—यदि शनि मिथुन राशि पर है तो स्त्रियों से धन प्राप्त कराता है।

कन्या राशि—कन्या राशिस्थ शनि प्रचुर धन लाभ का कारण होता है।

तुला राशि—धन लाभ या राज-पुरस्कार आदि।

धनु राशि—राज-सम्मान, पुरस्कार।

कुम्भ राशि—धन लाभ का श्रेष्ठ योग।

मीन राशि—पद, धन लाभ, पुरस्कार, लाटरी आदि से मध्यम मात्रा में धन प्राप्ति।

बुध महादशा का प्रभाव—

पूर्ण बली बुध जातक को प्रभुत्व, ऐश्वर्य और पर्याप्त धन का

लाभ करता है। मध्यम बली बुध सामान्य फल देने वाला होता हुआ भी जातक को प्रसन्न रखता हैं किन्तु हीनबल बुध अपनी महादशा में अशुभ फलकारी होता है।

विभिन्न राशियों पर बुध के धनप्रद योग–

मिथुन राशि–इसमें बुध की स्थिति कल्प धन लाभ की सूचक है।

कन्या राशि–बुध का कन्या राशि पर होना विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्ति का योग बनाता है।

तुला राशि—इसमें स्थिति बुध तेजी-मंदी के अत्यंत अन्तर के कारण व्यापार में प्रचुर धन लाभ का कारण हो सकता हैं।

धनु राशि–धनु राशिस्थ बुध मंत्री आदि का पद प्राप्त कराता, प्रतिष्ठा बनाता और सहसा धन दिलाता है।

केतु महादशा का प्रभाव–

केतु की महादशा मुख्यत: परेशान करने वाली समझी जाती है। यदि शुभ हो तो उसका अशुभ फल प्राप्त कराता है। यदि केतु शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ फल, और अशुभ फल हो तो अशुभ फल प्राप्त होता है।

मेष राशि–मेष राशिस्थ केतु जातक को आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति कराता है।

सिंह राशि–सिंह राजिस्थ केतु अल्प धन की प्राप्ति में सहायक है।

वृश्चिक राशि—इस राशि पर स्थित केतु धन सम्मान की प्राप्ति में सहायक होगा।

मीन राशि—मीन राजिस्थ केतु आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति कराता है।

शुक्र महादशा का प्रभाव-

पूर्ण बली शुक्र जातक को सब प्रकार से सुखी बनाता है। मध्यम बली शुक्र जातक को अपने पूर्वजों के धन की प्राप्ति कराता है हीनबली शुक्र हानिकारक होता है।

विभिन्न राशियों पर शुक्र के धनप्रद योग—

बृष राशि—इस राशि पर विद्यमान शुक्र जातक को अत्यन्त ऐश्वर्यवान और सर्व सुख सम्पन्न बनाता है। जातक को पशु भूमि तथा धनादि का लाभ होता है।

मिथुन राशि - इस राशि पर स्थित शुक्र भी सामान्य रूप से धन लाभ कराता है।

कर्क राशि—इस राशि पर शुक्र की स्थिति पर्याप्त धन की प्राप्ति कराती है।

सिंह राशि—सिंह राशिस्थ शुक्र स्त्रियों के माध्यम से धन प्राप्ति का कारण होता है।

बृश्चिक राशि—इस राशि पर स्थित शुक्र भी धन लाभ में कारण होता है।

मीन राशि—मीन राशि पर शुक्र की स्थिति राज्य से धन की प्राप्ति कराता है।

इस प्रभाव महादशाओ के अध्ययन के पश्चात अन्तर्दशाओं का अध्ययन भी आवश्यक होगा। इस सम्बन्ध है विशेष जानकारी अगले पृष्ठो पर दी जा रही है।



ग्रहदशाओं का भावानुसार फल

सूर्य–

चतुर्थ भावस्थ सूर्य स्थावर सम्पत्ति विषयक चिन्ता व्यक्त करता है, किन्तु समान्तर से जातक को मातृधन की प्राप्ति में सहायक होता है।

एकादश भावस्थ सूर्य अनेक प्रकार से धनागम के स्रोत्र विस्तृत करता है। तथा प्रचुर परिणाम मे धन दिलाता है।

धन भाव में विद्यमान चन्द्रमा भी धन की प्रचर मात्रा प्राप्ति कराता है।

चन्द्रमा–

तृतीय भावस्थ चन्द्रमा भी प्रयत्न करने से आकस्मिक धन प्राप्ति का योग बनाता है।

नवम भाव में चन्द्रमा की विद्यमानता भाग्योदय के कारण होती है।

दशम भावस्थ चन्द्रमा भी धन और राज सम्मान की प्राप्ति करता है।

एकादश भावस्थ चन्द्रमा भी जातक के लिए धन पक्ष मे बहुत हितकर है।

मंगल—

दशम भावस्थ मंगल भाग्योदय करने वाला है। जातक को अनेक स्रोतों से पर्याप्त धन प्राप्त करा देता है।

एकादश भावस्थ मंगल अनेक प्रकार के धनागम मार्ग बनाता और पर्याप्त धन प्राप्त कराता है।

राहु–

तीसरे भाव में राहु की स्थिति सब प्रकार हितकर होती है तथा धन प्राप्त करती है।

एकादश भावस्थ राहु भी धन का लाभ तथा सुख की प्राप्ति कराता है।

वृहस्पति–

प्रथम भाव में स्थित वृहस्पति जातक का भाग्योदय कराता और धन-लाभ के मार्ग खोलता है।

द्वितीय भाव में विद्यमान वृहस्पति धन और पद के पक्ष मे अत्यन्त हितकर है।

तृतीय भावस्थ वृहस्पति भी सहसा धन प्राप्ति का योग बनाता है।

पंचम भावस्थ वृहस्पति भी मध्यम मात्रा मे धन प्राप्त कराता है।

षष्ठ भावस्थ वृहस्पति भी धनागम का श्रेष्ठ सुयोग बनाता है।

सप्तम भावस्थ वृहस्पति से सामान्य धन-लाभ का योग बनेगा।

नवम भाव में स्थित वृहस्पति भी धन की प्राप्ति मे सहायक होता है।

शनि–

तृतीय भावस्थ शनि सामान्य लाभ का कारण होगा।

षष्ठ भावस्थ शनि धन लाभ में उत्तम, किन्तु अन्य विषयों में आशुभ होता है।

एकादश भावस्थ शनि अनेक प्रकार के उत्कर्ष और धन-लाभ का कारण है।

बुध–

प्रथम भावस्थ बुध स्थावर सम्पति से लाभ कराता है।

द्वितीय भाव में बुध की विद्यमानता भाग्योदय का कारण होती है और प्रचुर धन का लाभ कराती है।

सप्तम भाव मे बुध की स्थिति सामान्य रूप से धन प्राप्त कराती है।

दशम भावस्थ बुध भी धन सम्मान और सुयश की प्राप्ति में सहायक होता है ।

एकादश भाव में विद्यमान बुध अनेक प्रकार से धन-लाभ के मार्गों को प्रशस्त करता है ।

केतु—

तीसरे भाव में विद्यमान केतु जातक के भाग्योदय का कारण होता है ।

षष्ठ भावस्थ केतु धन पक्ष में लाभकर, किन्तु अन्त प्रकार से हानिप्रद होता है ।

एकादश भावस्थ केतु जातक को ऐश्वर्यशाली बना देता है तथा प्रतिष्ठाजनक स्थिति में ला देता है ।

शुक्र—

प्रथम भावस्थ शुक्र सामान्यतः शुभ होता हैं ।

चतुर्थ भावस्थ शुक्र भी शुभ होता है ।

एकादश भाव में विद्यमान शुक्र धनागम स्रोत विस्तृत करता है ।



अन्तर्दशाओं के फल

(१) शुभ ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा भी शुभ ग्रह की हो तो धन सम्मानादि सुख में वृद्धि करने वाली होती है । परन्तु शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा का प्रथम आधा कष्टकर और द्वितीय आधा भाग सुखकारी होता है ।

(२) यदि शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो उसका प्रथम आधा भाग सुखदायक और द्वितीय आधा भाग कष्टकारी होगा ।

(३) यदि पाप ग्रह की महादशा शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो उसका प्रथम आधा भाग कष्टकर होगा तथा दूसरा आधा भाग सुखदायक होगा।

(४) यदि पाप ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की ही अन्तर्दशा हो तो धन हानिकारक तथा अन्य प्रकारेण भी दुःखदायी होती है।

(५) पंचम, नवम एवं दशम भावस्थ ग्रहों की अन्तर्दशाएं सब प्रकार के शुभ फल प्रदान कराती है।

सूर्य महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१) सूर्य से सूर्य की अन्तर्दशा हो तो सब प्रकार से लाभकारी होगी।

(२) सूर्य में चन्द्रमा की महादशा अत्यन्त हितकर है तथा धन प्राप्ति का सुयोग बनाती है। यदि चन्द्रमा की स्थिति लग्न, केतु के साथ या त्रिकोण में हो तो धन सम्पत्ति तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों की वृद्धि कर देती हैं।

(३) सूर्य में मंगल की अन्तर्दशा भी सामान्य रूप से धन लाभ पक्ष में हितकर है।

(४) सूर्य में बृहस्पति की अन्तर्दशा धन-स्वर्ण, चाँदी आदि की वृद्धि में कारण होती है।

(५) सूर्य की महादशाओं में शनि का लग्नस्थ, चतुर्थस्थ, सप्तस्थ, नवमस्थ या दशमस्थ होना धन-लाभ का योग बनाता है।

(६) सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा बुध को लग्न, चतुर्थ पंचम, सप्तम नवम या दशम भाव में स्वग्रही या उच्चग्रही बनाती है तो वह योग धन-लाभ कारक होगा।

(७) सूर्य की महादशा में उच्चस्थ शुक्र धन की प्राप्ति कराने वाला होगा।

चन्द्र महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१) चन्द्रमा की महादशा में अन्तर्दशा का उच्चस्थ, स्वक्षेत्रीय

लग्न, पंचम, नवम या एकादश भावस्थ चन्द्रमा धन की प्राप्ति का योग उपस्थित करता है।

(२) चन्द्रमा की महादशा में उच्चस्थ या स्वगृही मंगलअपनी अन्तर्दशा में शुभ धनकारक होता है।

(३) चन्द्रमा की महादशा में राहु यदि चन्द्रमा से केन्द्र स्थान में हो तभी शुभ हो सकता है।

(४) चन्द्र महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा शुभ सुख तथा धन के देने वाली होती है।

(५) चन्द्र महादशा में शनि यद्यपि हानिकारक ही होता है। फिर भी स्वक्षेत्रीय या उच्चग्रही तो धन लाभ कराने में सहायक हो सकता है।

(६) चन्द्र महादशा में बुध की अन्तर्दशा धन तथा अन्य प्रकार के सुख पक्ष में हितकर होती है।

(७) चन्द्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा बुरे फल वाली होने हुए भी लग्न, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम और एकादश भाव में लाभकारी हो सकती है।

(८) चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा अनेक प्रकार से धन लाभ कराती है।

(९) चन्द्रमा मे सूर्य की अन्तर्दशा राज्य-सम्मान और धन-का योग बनाती है।

मंगल महादशा में अन्तर्दशाओं के योग–

(१) मंगल महादशा में अन्तर्दशा का मंगल १, ४, ५,७, ९, अथवा १०वें भाव में विद्यमान हो और शुभ द्रष्ट हो अथवा लग्नेश से युक्त हो तो धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य पद-प्रतिष्ठा, सम्मान आदि का लाभ कराता है।

(२) मंगल की महादशा में राहु की दिशा तभी लाभप्रद हो

सकती हैं जबकि राहु उच्चस्थ या मूल त्रिकोणस्थ हो। १, ४, ५, ७, ६, १० भाव में स्थित होना शुभ योग बनायेगा।

(३) मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा राज्य से धन-लाभ कराती है।

(४) मगल में शनि, बुध, केतु और शुक्र की अन्तर्दशायें प्रायः शुभ नहीं मानी जाती है।

(५) मंगल मे सूर्य को अन्तर्दशा धन-लाभ और सम्मान का लाभ कराती है।

(६) मंगल महादशा मे चन्द्रमा की अन्तर्दशा भी हितकर होती है।

राहु महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१) राहु की महादशा में राहु की ही अन्तर्दशा विदेश में धन लाभ कराती है।

(२) राहु की महादशा मे चन्द्रमा की अन्तर्दशा धन-लाभ के पक्ष मे शुभ है।

(३) राहु-महादशा मे शनि की अन्तर्दशा अशुभ किन्तु शनि के उच्चस्थ या अन्य प्रकार से (१, ४, ५, ७, ६, १ , ११,) भाव में हो तो धन प्राप्त कराने वाली हो सकती है। केतु की अन्तर्दशा अशुभ होती है।

(४) राहु को महादशा पें शुक्र की अन्तर्दशा कष्टकारी तो होती है, किन्तु धन का सामान्य लाभ करा देती है।

(५) राहु की अन्तर्दशा में सूर्य, चंद्र और मंगल की अन्तर्दशायें शुभ नहीं मानी जाती है।

बृहस्पति-महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१) बृहस्पति की महादशा बृहस्पति की ही अन्तर्दशा धन-पक्ष से बहुत हितकर होती और अनेक प्रकार से धन-लाभ कराती है।

(२) बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा शुभ नहीं मानी जाती।

(३) बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा अनेक प्रकार के धन प्राप्ति कराती है।

(४) बृहस्पति की महादशा मे केतु और शुक्र की अन्तर्दशाएँ प्रायः हितकर नहीं होती।

(५) बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा प्रायः शुभ होती और प्रकार के धन लाभ कराती है।

(६) बृहस्पति की महादशा मे चन्द्रमा की अन्तर्दशा सब प्रकार से शुभ तथा आस्मिक रूप से स्थायी धन प्राप्त कराती और पूर्व धन की वृद्धि करती है।

(७) बृहस्पति की महादशा मे मंगल की अन्तर्दशा कुछ मत में शुभ, कुछ में अशुभ है।

(८) बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा प्रायः शुभ नहीं मानी जाती।

शनि-महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१) शनि की महादशा में शनि की ही अन्तर्दशा प्रायः शुभ नही मानी जाती।

(२) शनि-महादशा में बुध की अन्तर्दशा सब प्रकार से सौभाग्यप्रद और धन-लाभ कराती है।

(३) शनि-महादशा में केतु की अन्तर्दशा प्रायः अशुभ ही मानी गई है।

(४) शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा धन-लाभ का योग बनाती है।

(५) शनि की महादशा में सूर्य, चन्द्र मंगल और राहु की अन्तर्दशाएँ प्रायः शुभ नहीं होतीं।

(६) शनि की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा धन का लाभ तथा अन्य सुख प्राप्त कराती है ।

बुध-महादशा में अन्तर्दशाओं के योग–

(१) बुध की महादशा में बुध की ही अन्तर्दशा धन का लाभ कराने में श्रेष्ठ है ।

(२) बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा प्रायः हितकर नहीं समझी जाती ।

(३) बुध की महादशा में शुक्र अन्तर्दशा धन-लाभ में कारण होती है ।

(४) बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा सब प्रकार के धनों की वृद्धि, सुख-वृद्धि तथा आकस्मिक धन-लाभ का योग बनाती है ।

(५) बुध की महादशा में चन्द्रमा, मंगल और राहु की अन्तर्दशाएँ प्रायः शुभ नहीं मानी जाती ।

(६) बुध की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा धन-पक्ष में भी शुभ समझिये ।

(७) बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा कुछ मत में धन की हानि करने वाला तथा कुछ मत में धन-लाभ कराने वाली है ।

केतु-महादशा में अन्तर्दशाओं के योग–

(१) केतु की महादशा में केतु की ही अन्तर्दशा प्रायः शुभ नहीं मानी जाती ।

(२) केतु की महादशा में शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और राहु की अन्तर्दशाएँ प्रायः शुभ नहीं होतीं । किन्तु स्वगृही या उच्चस्थ राहु धन-लाभ में सहायक हो सकता है ।

(३) केतु की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा धन-लाभ का योग बनाती है ।

(४) केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा प्रायः शुभ नहीं समझी जाती।

(५) केतु-महादशा में शनि की अन्तर्दशा अनेक प्रकार के सुख तथा धन-लाभ कराती है।

शुक्र-महादशा में अन्तर्दशाओं के योग—

(१; शुक्र की महादशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा सब प्रकार से सुखकारी और धन-दायक योग प्रस्तुत करती है।

(२) शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा धन-पक्ष में प्रायः शुभ नहीं होती।

(३) शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा भी प्रायः अशुभ ही समझी जाती है। किन्तु स्व ाशिस्थ या उच्चस्थ चन्द्रमा धन-लाभ का योग बना सकता है।

(४) शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा भी प्रायः अशुभ ही समझिये।

(५) शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा भी कुछ लाभ नहीं पहुंचाती।

(६) शुक्र की महादशा में वृहस्पति की अन्तर्दशा नष्ट धन को भी प्राप्त करा देती है।

(७) शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा धन पक्ष में कुछ हितकर हो सकती है।

(८) शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा सब प्रकार के सुख तथा धन-ऐश्वर्यों की प्राप्ति में सहायक समझिये।

राशि-अनुसार भाग्योदय काल

आकस्मिक धन-प्राप्ति तभी सम्भव है, जबकि भाग्योदय का योग। अभाग्य की अवस्था में अतिरिक्त रूप से धन प्राप्ति तो क्या, जीवन यापन के लिए आवश्यक धन की पूर्ति भी नहीं हो पाती। इसी-लिए यहाँ प्रत्येक राशि में जन्मे हुए मनुष्यों के भाग्योदय का समय लिखना अपेक्षित होगा—

मेष लग्न—

एक कहावत है कि 'समय सदैव समान नहीं रहता, इसका अर्थ है कि समय परिवर्तनशील है और वह भाग्य और प्रयत्न के अनुकूल होने पर बदलता रहता है।

मेष लग्न में उत्पन्न मनुष्यों के लिए समय परिवर्तन की मुख्य आयु २१ से २८ वर्ष तक समझनी चाहिए। इस बीच में यह भी सम्भव है कि स्थान-परिवर्तन करना पड़े यथा देश-विदेश की यात्रा के द्वारा धन की प्राप्ति हो सके।

सामान्यतः मेष राशि वालों के लिए विकास के अवसर २२ से ३५ वर्ष की आयु तक प्राप्त हो सकते हैं। सुखी जीवन का समय ३५ वर्ष की आयु होने पर आता है। उस अवस्था में यह सम्भव है कि कोई लाटरी आदि फल जाय अथवा किसी रिश्तेदार से दाय भाग द्वारा या किसी अन्य प्रकार से धन प्राप्त हो जाय। ग्रहों की अनुकूलता प्रति-कूलता के कारण भाग्योदय काल में परिवर्तन हो सकता है।

वृष लग्न—

वृष लग्न में उत्पन्न जातक परिश्रमी और बुद्धिमान होते हैं तथा उनमें महत्वाकांक्षाओं की भी कमी रहती। इसलिए धन-प्राप्ति के लिए भी अधिक प्रयत्नशील रहते हैं।

सामान्यतः इनके भाग्योदय का समय २२ वर्ष से २८ वर्ष और

विशेष रूप से २८ से ४६ वर्ष तक समझा जाता है। २१,१६ और २८ वां वर्ष भी इनके लिए धनागम के लिए शुभ हैं। ३१,३७ और ४७ वे वर्ष सहसा धन-प्राप्ति का योग बन सकता है। किन्तु धन-प्राप्ति काल का योग ग्रहों पर भी बहुत निर्भर करता है।

मिथुन लग्न—

मिथुन राशि में उत्पन्न मनुष्य कठिन परिश्रमी होते हैं। उनका उद्देश्य जीवन को सब प्रकार में सार्थक और सुखी बनाना होता है। किन्तु भाग्य के आगे परिश्रम भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता।

परन्तु, ग्रहों की अनुकूलता बहुत बार भाग्य को भी अनुकूल बना देती है। मिथुन राशि का अधिपति बुध है, इसलिए लग्न भाव परा अथवा बुध पर उसके मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक को सहसा धन की प्राप्ति प्रचुर परिमाण में हो सकती है।

सामान्यत: २५ से ३५ वर्ष की आयु के मध्य भाग्योदय होना चाहिए। फिर भी भाग्योदय-काल की निर्भरता बहुत कुछ ग्रहों की अनुकूलता पर है। मिथुन राशि के अनेक व्यक्तियों का भाग्योदय प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था में भी देखा गया है। किसी-किसी का तो ८० वर्ष से ऊपर की अवस्था में पूर्ण भाग्योदय हुआ है।

कर्क लग्न—

कर्क लग्न में उत्पन्न मनुष्य परिश्रमी कम और विचारशील अधिक होते है। यह धन-प्राप्ति और सुखोपभोग के लिए उत्कृष्ट अभिलाषी रहते हैं। किन्तु भाग्य इन्हें सफलताओं की ओर जाते-जाते झटका दिये बिना नहीं मानता।

परन्तु अनेक व्यक्तियों के ग्रह कभी-कभी अत्यन्त अनुकूल योग उपस्थित कर देते हैं, जिससे आशातीत सफलता प्राप्त हो जाती है और जातक स्वयं ही आश्चर्य करने लगता है कि यह उपलब्धि किस प्रकार हो गई। यदि जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में हुआ हो तो ऐसे योग समु-

परिस्थित होना आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि कर्क लग्न के अधिपति चन्द्रमा की गणना स्वतः शुभ ग्रहों में है। यदि उनकी स्थिति उच्चस्थ, स्वगृही, शुभ युक्त या शुभ दृष्ट रूप से हो तो इस प्रकार का अवसर उपलब्ध होना असम्भव नहीं है। उनका भाग्योदय का समय २५ से ५० वर्ष तक कभी हो सकता है।

सिंह लग्न—

जिन मनुष्यों का जन्म सिंह लग्न में हुआ हो, वे आत्म-संतोष और सौम्य प्रवृत्ति के होते हैं। वे भाग्य पर अधिक भरोसा रखने वाले होने के कारण विशेष चिन्ता नहीं करते ।

फिर भी धन-प्राप्ति की आकांक्षा तो इन्हें भी रहती है। उसके लिए प्रचलित उपायों का प्रयोग यह भी करते ही हैं। फिर इनमें बुद्धि, तेज और प्रभाव की भी कमी नहीं रहती। क्योंकि इनकी जन्म लग्न (सिंह) का स्वामी सूर्य है और सूर्य जिसके लिए अनुकूल हो जाय, उसके तो कहने ही क्या हैं।

सामान्यतः ३२ से ४२ वर्ष तक की आयु इनके भाग्योदय की आयु समझी जाती है। कुछ मत में ४२ वर्ष ५६ वर्ष की आयु में विशेष रूप से सौभाग्य वर्द्धन हो सकता है। परन्तु हमारे मत में तो जब अनुकूल ग्रह दिशा होती है, तभी सौभाग्य की वृद्धि हो सकती है। ग्रह दिशा में विषय में अन्यत्र लिखेंगे।

ध्यान रहे कि सिंह लग्न में उत्पन्न हुए जातकों को सुख की उपलब्धि तब अधिक रहती है, जब कि सूर्य पर अथवा लग्न भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो।

कन्या लग्न—

कन्या लग्न में उत्पन्न हुआ मनुष्य भावनाशील अधिक होता है वह किसी भी कार्य में विचार से काम नहीं लेता, वरन् जल्दबाजी के कारण अपने लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न कर लेता है।

परन्तु कन्या का स्वामी बुध है, जो कन्या राशि में ही उच्चस्थ भी रहता है। यदि इसकी स्थिति शुभ हो तथा शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति में सफल भी हो सकता है। यदि ऐसे लोग साहस से काम लें तो और हिम्मत न हारें तो अच्छी उन्नति कर सकते हैं। इनका भाग्योदय काल युवावस्था ही है। किन्तु ग्रह-योग भेदसे प्रौढ़ावस्था या बुढ़ापे में भी धन की उपलब्धि सम्भव है।

तुला लग्न--

तुला लग्न में उत्पन्न हुए मनुष्य प्रसन्न चित्त होते हैं यह बड़े से बड़े संकट काल में भी धैर्य को नहीं छोड़ते। इनमें विवेक बुद्धि और परिश्रम की शक्ति रहती है, इसलिए सफलता आशा को कभी नहीं छोड़ते। असफल रहने पर भी अपने कार्य में लगे ही रहते हैं।

लाटरी आदि क्रय करने में इनकी भी रुचि हो सकती है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र है। यदि शुक्र की स्थिति स्वगृही, उच्चगृही, शुभ युक्त और शुभ दृष्ट रूप से हो तो आकस्मिक धन-लाभ की सम्भावनाएं अधिक बढ़ जाती हैं। इनका भाग्योदय काल युवावस्था के बाद माना जाता है।

वस्तुत: ऐसे लोग सत्य, अहिंसा, न्याय, दया, अनुशासन, शान्ति आदि से अधिक प्रेम करते और धन को तृण के समान समझते हैं। महात्मा गांधीजी का जन्म तुला लग्न में ही हुआ था। इससे अनुमान लगा सकते हैं कि तुला लग्न वाले मनुष्यों में कितनी सामर्थ्य होती है।

वृश्चिक लग्न-

इस लग्न में उत्पन्न हुए मनुष्य आकर्षक व्यक्तित्व के होते हैं। इनकी रुचि धनोपार्जन में अधिक होती है, किन्तु चाहते यह हैं कि बातों से ही काम निकल आये, अधिक परिश्रम न करना पड़े।

वृश्चिक लग्न का अधिपति मंगल हैं, इसलिए मंगल की अनुकूल

स्थिति जातक के भाग्योदय में कारण होकर आकस्मिक रूप से पर्याप्त धन-लाभ करा सकती है।

ऐसे व्यक्तियों भाग्योदय-काल प्रायः युवावस्था समझा जाता है। किन्तु बाद में भी विशेष रूप से आशातीत लाभ होते देखा गया है। कुछ लोगों को प्रौढ़ावस्था में और कुछ को वृद्धावस्था में लाभ रहा है, यह सब ग्रहों की अनुकूलता पर ही निर्भर है।

धनु लग्न—

धन लग्न में उत्पन्न मनुष्य लगन के बड़े पक्के होते है। यह जिस कार्य को करते हैं, उसमें असफल रह कर भी बार-बार करते ही रहते हैं। इसीलिए इस लग्न वाले जिन मनुष्यों को लाटरी, सट्टा, रेस आदि का चस्का पड़ जाता है, वे असफल रहने पर भी उससे मुख नहीं मोड़ते।

इस लग्न का अधिपति बृहस्पति हैं। धन-पक्ष में यह भी कम प्रभावशाली नहीं। अनुकूल हुआ बृहस्पति पौबाहर कर सकता है। इसके प्रभाव से जातक को आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति का कोई न कोई मार्ग खुला मिल सकता है।

मकर लग्न—

मकर लग्न में जन्म हुए मनुष्य चिन्तन प्रिय होते हैं। यह अपने जीवन में भाँति-भाँति की योजनाएँ बनाते रहते है। असफल रहने पर भी बार-बार करने से आकस्मिक रूप से आशातीत सफलता मिल भी जाती है।

मकर लग्न का अधिपति शनि है। इसलिए शनि की अनुकूलता प्राप्त करना प्रायः कठिन ही होता है। फिर भी जिन्हें इस ग्रह की अनुकूलता का योग प्राप्त हो जाता है, उन्हें धन प्राप्ति में सफलता मिलना भी सम्भव है। शनि की अनुकूलता वाले योगों पर अन्यत्र प्रकाश डाला जा चुका है, इसलिए यहाँ पर पुनरोक्ति अपेक्षित नहीं है।

कुम्भ लग्न—

कुम्भ लग्न में उत्पन्न हुए जातक अपने विचारों पर दृढ़ रहने वाले होते हैं। इनमें स्मरण शक्ति बहुत तीव्र होती है। यह जिस कार्य को आरम्भ करते है, उसमें बाधाएं बहुत आती हैं। किन्तु जो लोग उन बाधाओं की परवाह किये बिना लगे ही रहते हैं, उन्हें सफलता मिलनी कुछ कठिन नहीं होती।

कुम्भ लग्न का अधिपति भी शनि ही है। यह प्रायः रोड़ा अटकाने वाला ग्रह है। किन्तु जब यह अनुकूल हो जाता है, तब अपेक्षित धन-लाभ का कारण हो सकता है।

मीन लग्न—

मीन लग्न में उत्पन्न जातक विचारशील, मधुरभाषी और धुन के पक्के होते हैं। जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ना चाहते।

ऐसे लोग महत्वाकांक्षी भी बहुत होते है। यह अपने बुद्धि विवेक से लक्ष्य पर पहुँच जाते हैं। मीन लग्न का स्वामी बृहस्पति है, जो धन देना चाहता है, तो छप्पर फाड़ कर देता है। मीन राशि वाले भी जब बृहस्पति की अधिक अनुकूलता प्राप्त करते हैं तो उनका भाग्योदय भी हो जाता है।

मीन लग्न वाले जातक का भाग्योदय १६ वर्ष की आयु से ६० वर्ष तक की आयु में कभी भी हो सकता है।

उक्त अध्ययन सभी लग्नों में उत्पन्न हुए जातकों के विषय भाग्योदय काल ही सूचित नहीं करता, वरन् उनके स्वभावादि के विषय में भी संक्षिप्त जानकारी देता है। इसलिए इसकी सहायता से निष्कर्म अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है।

एक ज्योतिषीजी का कथन है कि अनेक व्यक्ति असफलताओं के चक्र में पड़ कर निराश हो जाते हैं। उनके लिए उचित मार्ग-दर्शन दिया जा सके तो बहुत कुछ उपकार किया जाना सम्भव है।

आकस्मिक लाभ के विभिन्न योग

सुनफा योग—

जो जातक सुनफा योग में उत्पन्न हुआ हो, वह स्वयं तो धनोपार्जन करता ही है, राजा आदि से या अन्य स्रोतों से भी आकस्मिक रूप में धन प्राप्त करने में समर्थ रहता है।

सुनफा योग उसे कहते हैं, जिसमें चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य न हो, वरन् अन्य कोई भी एक या एक से अधिक ग्रह हो सकते हैं।

यदि अधियोग हो तो वह जातक को अधिक बलवान और धनवान बनाता है। ऐसा व्यक्ति सहस राजा के समान ऐश्वर्य अथवा राजपद तक प्राप्त कर सकता है।

अधियोग—

अधियोग का अभिप्राय उस योग से है, जिसमें चन्द्रमा से षष्ठ, सप्तम और अष्टम स्थान में शुभ ग्रह विद्यमान हों। परन्तु ध्यान रहे कि जब बुध, गुरु और शुक्र अस्त न हों तथा क्रूर द्रष्ट न हों तभी यह बनता है।

अमला योग—

अमला योग में उत्पन्न हुआ जातक बहुत भाग्यवान होता है। उसे जब से आकस्मिक रूप से प्रचुर धन की प्राप्ति होती है, तब से जीवन-पर्यन्त धनिक बना रहता है। कुछ मत में जातक आरम्भ से ही धनवान होता है।

अमला योग का अर्थ है जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से दशम स्थान पर किसी शुभ ग्रह का होना।

महाभाग्य योग—

जिनका महाभाग्य योग में जन्म हुआ है, वे राजा के कृपा-पात्र

होते हैं उन्हें आकस्मिक रूप से राज्य द्वारा विवेक धन अथवा जागीर की प्राप्ति होती है।

परन्तु यह योग तब बनाता है, जब पुरुष का जन्म दिन में हुआ हो, लग्न पुरुष नक्षत्र (हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, अभिजित्, पुष्य, अनुराधा, अश्विनी, पू० भाद्र० या० उ० भाद्र०) में हो तथा पुष्य नक्षत्र के साथ सूर्य या चन्द्रमा की स्थिति हो।

यह योग उन स्त्रियों को भी हो सकता है, जिनका जन्म रात्रि के समय हुआ हो तथा लग्न में कोई स्त्री नक्षत्र हों और स्त्री नक्षत्र के साथ सूर्य अथवा चन्द्रमा हो।

सम्पत्ति योग—

यह योग जातक को बहुत धन प्राप्त कराने वाला होता है। यह तब बनता है, जब कि लग्न भाव से पाँचवाँ भाव तुला राशि का हो और शुक्र एवं शनि की स्थिति पाँचवें और ग्यारहवें भाव में हो। सहसा अधिक सम्पत्ति प्राप्त कराने वाला होने से ही इस योग को सम्पत्ति योग कहा गया है।

धन-सुख योग—

प्रचुर परिमाण में धन की उपलब्धि कराने वाला यह योग तभी बनता है जब पुरुष जातक का जन्म दिन में हुआ हो तथा अपने नवांश में स्थिर चन्द्रमा बृहस्पति के द्वारा देखा जाता हो। अथवा चन्द्रमा अपने अधिमित्र के स्थान में बैठा हो तो भी बन जायेगा।

यदि जातक स्त्री है तो उसके लिए यह योग तब बनेगा, जब कि उसका जन्म राशि में हुआ हो नवांश में स्थित चन्द्रमा पर शुक्र की दृष्टि हो।

वित्त योग—

यह योग भी जातक को पर्याप्त धन की प्राप्ति में सहायता होती है। यह तभी बनेगा जबकि लग्न से पाँचवीं सिंह राशि हो और उसमें

सूर्य की विद्यमानता हो तथा ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा और बृहस्पति दोनों ग्रह एक साथ बैठे हों।

पुष्कल-योग—

इसका नामानुसार ही फल समझिये। ऐसा जातक अपार सम्पत्ति का स्वामी और सब प्रकार से सुखी होता है। यह योग तब बनाता है जब लग्नेश अथवा चतुर्थेश बलवान होकर चतुर्थ भाव या किसी भी केन्द्र भाव में बैठे हों।

कमला योग—

यह भी पर्याप्त मात्रा में स्थायी रूप से धन लाभ कराने वाला योग है। यदि लग्न भाव से पाँचवी राशि मकर अथवा कुम्भ हो तथा मंगल की स्थिति बुध से ग्यारहवें स्थान पर हो। धनदायक होने से ही इसे कमला योग कहा गया है।

श्री योग—

कमला का ही पर्याय श्री है, जिसका अर्थ होता है लक्ष्मी अथवा धन-राशि। यह योग जातक को सहसा अत्यन्त धन-सम्पन्न बना देता है। यदि लग्न से पाँचवीं राशि मिथुन अथवा कन्या हो तथा ग्यारहवें भाव मे चन्द्रमा और मंगल दोनों एक साथ बैठे हों तो यह योग बनाता है।

अखण्ड धन योग—

इस योग वाला जातक प्रायः धनी तो होता ही है, साथ ही उसे प्रचुर परिमाण में आकस्मिक रूप से स्थिर धन को भी विशेष रूप से प्राप्ति सम्भव होती है।

यह योग तब बनता है, जबकि लग्न से पाँचवीं राशि धनु अथवा मीन हो तथा चन्द्रमा और मंगल दोनों एक साथ ग्यारहवें भाव में विद्यमान हों।

कलानिधि योग—

यह योग जातक को बहुत धनवान, विद्वान और गुणवान बनता है। यह तब बनता है जबकि कुण्डली में दूसरे या पाँचवें भाव में वृहस्पति हो और उसके साथ बुध और शुक्र की स्थिति हो अथवा बुध और शुक्र द्वितीय या पंचमस्थ वृहस्पति को देखते हो।

गदा योग—

इस योग के होने से जातक का २८ वर्ष की आयु में भाग्योदय होना तथा प्रचुर धन की प्राप्ति होती है। यह योग तब बनता है, जब प्रथम और चतुर्थ या चतुर्थ और सप्तम अथवा सप्तम और दशम भाव में ही (अर्थात दो ही भावों में) सभी ग्रह विद्यमान हो गए हों।

लक्ष्मी योग—

यह योग भी जातक को अत्यन्त धनवान बनाने वाला है। श्री और कमला नामक योगों से भी प्रबल है। इसमें अपार सम्पत्ति प्राप्त कराने की शक्ति है। यह योग तब बनता है, जब नवमेश उच्चस्थ और स्वगृही हो साथ ही लग्नेश भी बनता हो।

यदि नवमेश और शुक्र उच्चराशिस्थ या स्वगृही होकर केन्द्र भाव या त्रिकोण भाव में विद्यमान हो तो भी 'लक्ष्मी' योग बन जाता है। दोनों ही प्रकार समान फलदायक है।

महाभाग्य योग—

इसे परम सौभाग्य योग भी कहते हैं। इस योग के द्वारा जातक को अत्यन्त सौभाग्य वृद्धि होती है और वह सहसा प्रचुर मात्रा में धन की उपलब्धि का अवसर प्राप्त करता है।

यह योग यदि जातक पुरुष हो तो तब बनेगा, जबकि उसका जन्म दिन में हुआ हो तथा लग्न, सूर्य लग्न और चन्द्र लग्न तीनों की ही अयुग्म राशि हो।

यदि जातक स्त्री है तो उसका जन्म रात्रि में हुआ हो तथा लग्न, सूर्यलग्न और चन्द्रलग्न तीनों की युग्म राशि हो।

वसुमति योग—

यह भी एक अच्छा तथा सहसा धन प्राप्त कराने वाला योग है। वस्तुतः इस योग के प्रभाव से जातक के पास किसी वस्तु का अभाव नहीं होता। यह तभी बनेगा जबकि सहज रूप से सभी ग्रह (चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र) लग्न स्थान में अथवा चन्द्र लग्न से उपचय स्थान में विद्यमान हों।

भास्कर योग—

यह योग राजा के समान ऐश्वर्यशाली बनाने वाला है। जातक किसी कंगाल में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, अकल्पित रूप से धन की प्राप्ति में सफल होता है।

यह योग तब बनेगा जब बुध की स्थिति सूर्य से दूसरे स्थान पर हो चन्द्रमा की स्थिति बुध से ग्यारहवें स्थान पर हो। साथ ही वृहस्पति की स्थिति भी चन्द्रमा से त्रिकोण में होनी चाहिए।

अखण्ड साम्राज्य योग—

यह योग जातक तो अखण्ड ऐश्वर्य और राजपद की प्राप्ति कराने वाला माना जाता है। इसके प्रभाव से जब भी धन की प्राप्ति होती है, तब स्थिर रूप से ही होती है।

यह योग तब बनता है, जबकि धनेश लाभ-भाव में तथा वृहस्पति एकादश भाव में अपने भाव का स्वामी होकर स्थिर हो। अथवा नवमेश या धनेश चन्द्र लग्न से केन्द्र भाव में तथा वृहस्पति दूसरे, पाँचवें व ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर केन्द्र भाव में स्थिर हो।

यव योग—

यह योग युवावस्था में किसी भी स्रोत से आकस्मिक धन की

प्राप्ति कराता है। जातक को २४-२५ वर्ष की आयु में धन की विशेष रूप से प्राप्ति होती है।

यह योग तभी बनता है जब सभी पाप ग्रह जन्म कुण्डली के लग्न भाव और सप्तम भाव में विद्यमान रहें। अथवा सभी शुभ ग्रह चतुर्थ भाव और दशम भाव में स्थित हों।

शृंगाटक योग—

इस योग का प्रभाव जातक की प्रायः २३ वर्ष की आयु में होना चाहिए। क्योंकि यही उसके भाग्योदय का समय बनता है, जिसमें कि वह सहसा धन प्राप्त करके अपने जीवन को नया मोड़ दे पाता है।

यह योग तभी बनता है, जबकि सभी ग्रह कुण्डली के पांचवें और सातवें भाव में विद्यमान हो।

राजहंस योग—

इस योग के प्रभाव से जातक अकल्पित रूप से अत्युच्च पद प्राप्त कर लेता हैं। वह कहीं राजदूत या राज्यपालादि का पद प्राप्त कर सकता है।

यह योग तभी बनेगा, जबकि सभी ग्रह मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशि में विद्यमान हों।

शंख योग—

यह योग भी जातक को अत्युच्च पद की प्राप्ति कराने में सहायक है। यह योग दो प्रकार से बनता है—

(१) यदि भाग्येश बलवान हो तथा लग्नेश और दशमेश चर राशि में स्थित हो।

(२) यदि लग्नेश बलवान हो और पंचमेश तथा षष्ठमेश परस्पर केन्द्र भावों में विद्यमान हों।

गजकेसरी योग—

यह योग निर्धन परिवार में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को भी उच्च पद तथा आकस्मिक रूप से धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

यह योग तब बनता है जब लग्न भाव अथवा चन्द्रमा से वृहस्पति केन्द्र में स्थित हो तथा वह शुभ ग्रहों से युक्त तथा शुभ द्रष्ट हो। किसी नीच राशि में स्थिति न हो।

सर्वार्थदातृ योग—

यह योग जातक की सभी अभिलाएँ पूर्ण करने वाला माना जाता है. यह तथ्य इसके नाम से ही प्रकट है। यह धनहीनों के लिए सहसा ही प्रचुर परिमाण में धन-लाभ को योग समझा जा सकता है।

यह योग तब बनता है, जब लग्न में शुभ ग्रह के साथ चतुर्थ भाव में शुक्र हो सप्तम भाव में बुध और दशम भाव में मंगल की विद्यमानता हो।

श्रीमुख योग—

यह योग जातक की स्थिति में आकस्मिक रूप से परिवर्तन कर देने में समर्थ है। इसके प्रभाव से अपार धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है और जातक अत्यन्त सुखी जीवन व्यतीत करने लगता है। विद्वानों का कथन है कि इस योग के होने पर २० वर्ष तक राजा के समान ऐश्वर्यशाली रहना चाहिए।

यह योग तब बनता है, जब कि लग्न भाव में वृहस्पति, नवम भाव में शुक्र और दशम भाव में सूर्य स्थित हो।

आनन्द योग

यह योग जातक के लिए सौभाग्यशाली और सुखी बना देता है। यद्यपि बाल्यकाल में इस योग का कोई प्रभाव नहीं होता, वरन् युवावस्था

से इसका फल आरम्भ हो जाता है और '४४ वर्ष की आयु तक हुए धन की समाप्ति नहीं हो पाती।

यह योग तब बनेगा, जबकि शनि की राशि में वृहस्पति और वृहस्पति की राशि में शनि हो तथा शेष सभी शुभ-अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में विद्यमान हो।

नन्दा योग–

जिस जातक की जन्म कुण्डली मे यह योग पड़ता हो, वह सहसा धन प्राप्ति का अवसर प्राप्त कर लेता। यह बात अन्य है कि धन-प्राप्ति लॉटरीं, सट्टा, गढ़े धन या रिश्तेदार से प्राप्त हुए धन के रूप मे ही क्यों न हो।

जब जन्म कुण्डली नौ ग्रहों की स्थिति इस प्रकार हो तभी 'नन्दा' योग बनता है—

(१) तीन भावों मे दो-दो की युति मे, और

(२) तीन भावो में एक-एक अकेले।

श्रीनन्द योग–

इस योग को बहुत प्रभावशाली माना जाता है। जातक इसके प्रभाव सब प्रकार के ऐश्वर्यो और सुख-सुविधाओं को प्राप्त हो सकता सम्भव है। जो कि किसी स्रोत से पर्याप्त परिमाण मे धन उपलब्ध होने पर ही जब जन्म कुण्डली में चन्द्र और शुक्र मीन राशि पर और वृहस्पति कर्क राशि पर हो तथा तीसरे और ग्यारहवें भावों में सभी पाप ग्रह विद्यमान हो।

नन्द योग–

यह योग उक्त श्रीनन्द योग से कुल अल्प फल प्रदान करता है। उसके प्रभाव से भी जातक को आकस्मिक रूप से धन की उपलब्धि होनी चाहिए।

नन्दा योग के समान इस योग में भी यह देखना होता है कि तीन भावो में दो-दो ग्रह बैठे है या नही। साथ ही शेष तीन ग्रह एक-एक करके एक-एक भाव में बैठे रहना चाहिए।

दानध्यक्ष योग–

यह योग इतना प्रभावशाली है कि जातक को अपार धन की प्राप्ति कराता है। वह धन इतनी प्रचुर मात्रा म होता है कि दान करते रहने पर भी सप्तम नही होता।

यह योग छः प्रकार से बनता है—

(१) यदि नवमेश चौथे भाव म हों और द्वादशेश को वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो।

(२) यदि लग्न भाव में नवमेश स्थित हो तथा केन्द्र भाव में वृहस्पति हो।

(३) यदि लग्न भाव मे नवमश हो और केन्द्र या त्रिकोण में शुक्र विद्यमान हो।

(४) यदि केन्द्रस्थ वृहस्पति को नवमेश अपनी पूर्ण दृष्टि से देखता हो।

(५) यदि केन्द्रस्थ शुक्र को नवमेश अपनी पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो।

(६) यदि बुध उच्च राशि में हो और भाग्येश उसे देखता हो तथा लाभेश केन्द्र मे विद्यमान हो।

अनुघात योग–

इस योग के प्रभाव से जातक अत्यन्त वैभव सम्पन्न हो जाता है। तीस वर्ष की आयु तक उसे सामान्य सुख प्राप्त रहता है। किन्तु तीस वर्ष के पश्चात् वह आकस्मिक रूप से प्रचुर परिमाण में धन प्राप्त करके ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने में सफल होता है।

योग तब बनता है, जब शुक्र की स्थिति मंगल की राशि में, मंगल की स्थिति शुक्र की राशि मे, बुध और वृहस्पति मेष राशि में तथा चन्द्रमा चतुर्थ भाव में विद्यमान हो।

सागर योग---

यह योग जातक को धन आदि की सम्पन्नता कराता है। सामान्य और विशेष रूप मे भी धनकी प्राप्ति इसके प्रभावसे होती है। चौवालीस वर्ष की आयु तक इस योग का उत्कृष्ट प्रभाव पूर्ण रूप से बना रहता है।

मंगल से शनि तक कोई भी एक ग्रह केन्द्र भाव में विद्यमान हो और उस पर अशुभ दृष्टि न हो तभी यह 'सागर योग' बना समझा जाता है।

वाग्भव योग---

यह योग जातक को विद्वान तो बनाता ही है, साथ ही आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति में भी सहायक होता है।

यह योग तब बनता है, जब कि सभी शुभाशुभ ग्रह केवल चतुर्थ पंचम, नवम, एकादश और द्वादश भावों में ही विद्यमान हों।

ऐन्द्रबाहु योग---

यह योग जातक को पराक्रमी के साथ धनवान भी बनाता है। ऐसे जातक का भाग्य साथ देता है, जिससे उसे सहसा धन की प्राप्ति हो जाती है।

यह ग्रह तब बनता है, जब कि सभी शुभाशुभ ग्रह केवल लग्न भाव, धन भाव तृतीय भाव और चतुर्थ भाव में ही स्थित हों तथा शेष सभी भाव खाली हों।

लाटरी से धन प्राप्ति के योग

भावों का अवलोकन–

लाँटरी द्वारा धन-प्राप्ति के लिए जातक की जन्म कुण्डली के दशम और एकादश भावों में अध्ययन आवश्यक होता है। क्योंकि राज्य सरकारें लाँटरी चलाती है और राज्य का गृह दशवाँ होता है, इसलिए दशवें भाव के शुभ हुए बिना लाँटरी का योग नही बनेगा।

ग्यारहवें भाव को लाभ का घर मानते है। यदि यह निर्बल है तो भी धनागम के कार्य में बाधा उपस्थित होती है। ग्यारहवें भाव के शुभ होने पर ही लाँटरी से लाभ सम्भव है।

तीसरे भाव के द्वारा इच्छा, महत्वाकांक्षा, सन्तोष आदि की प्राप्ति होती है, इसलिए इस भाव का भी अध्ययन करना होगा। यदि यह किसी अशुभ ग्रह से युक्त है तो इच्छा या महत्वाकांक्षा की पूर्ति नहीं हो सकती और जब इच्छा आदि की पूर्ति नहीं होती तो असन्तोष ही कैसे हो सकता है।

पंचम भाव में भी विचारणीय होता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध भी जुआ, सट्टा या लाँटरी से है। इसमें कोई बलवान ग्रह विद्यमान हैं और वह इस भाव को शुभ बना रहा है तो लाँटरी फलने का योग बनना कुछ असम्भव न होगा।

लाँटरी से धन प्राप्ति तभी होगी, जब भाग्योदय का समय उपस्थित हुआ होगा। भाग्योदय के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए नवम भाव देखना आवश्यक होगा।

यदि लाँटरी का टिकट माता के नाम से खरीदा गया हो तो चतुर्थ भाव का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जातक का स्वयं का भाग्योदय काल उपस्थित न हुआ हो और माता धन-प्राप्ति का योग बनता तो टिकिट उसी के नाम से क्रय किया जाय।

यदि पत्नी का भाग्योदय योग हों और जातक का अपना योग न बने तो पत्नी के नाम से टिकट खरीदा जाय। इसी प्रकार भाई, बहिन, पुत्र, पिता आदि के नाम से भी टिकट खरीदे जा जा सकते हैं पत्नी का सातवां भाव, भाई बहिन का तीसरा भाव पुत्र का पाँचवा भाव तथा पिता का दशवाँ भाव होता है। भाव-ज्ञान के लिए इसी पुस्तक में दिये गये स्वजन-सम्बन्धियों के विचार से सम्बन्धित कुण्डली का चित्र देखिए।

ग्रहों की बलवत्ता–

अधिक बलवान ग्रह अपनी दशा से धन प्राप्ति का श्रेष्ठ सुयोगय बनाता है। यदि उस पर दशमेश का प्रभाव है तो कोई कारण नहीं कि राज्य से धन की प्राप्ति का योग न बने। यह धन प्राप्ति राज्य लाटरीं से भी हो सकती है और राज्य-पुरस्कार से भी माता के नाम से लाटरी है तो चतुर्थेश का प्रभाव काम करेगा।

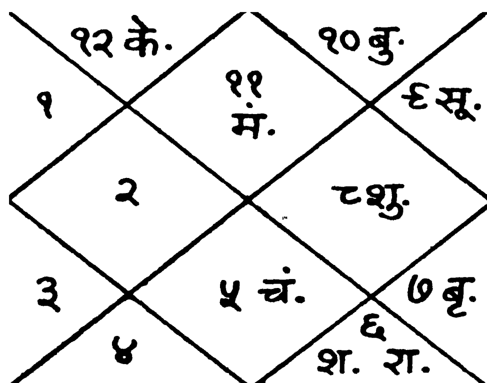
जातक की जन्म कुण्डली यदि पंचमेश का प्रभाव व्यक्त करे तो सन्तान के नाम से लाटरी की खरीद लाभदायक होगी। यदि सप्तमेष का प्रभाव दिखाई दे तो पत्नी के नाम से लाँटरी खरीदना चाहिए। तृतीयेश का बल भाई-बहिन के नाम से लाटरी-क्रय मे हितकर होगा दशमेश प्रबल हो तब तो कहने ही क्या हैं, राज्य से धन मिलना ही चाहिए। किन्तु यह योग तब अधिक लाभकारी होता है. जबकि लाँटरी पिता के नाम से खरीदी गई हो।

अभिप्राय यह है कि जातक का स्वयं का कोई भाग्य योग न बने तो घर के जिस किसी व्यक्ति का भी प्रबल योग बनता हो, उसी के नाम से लाँटरी की टिकट खरीदी जा सकती है।

सूर्य का प्रभाव–

ध्यान रहे कि बलवान ग्रह हो आकस्मिक धन का भाव का योग बनाते हैं। यदि सूर्य बलवान है तो मनुष्य का ढका हुआ भाग्य

खुल सकता है। लांटरी खुलने का अर्थ भी ढके हुए भाग्य का खुलना हीं है। राहु का बलवान होना भी ऐसा ही योग बना सकता है। सूर्य की प्रभावशाली स्थिति स्पष्ट करने के लिए यहाँ एक कुण्डली उदाहरणार्थ प्रस्तुत है—



यह कुम्भ लग्न की कुण्डली हैं। इसका एकादश भाव धन राशि का है। धन राशि में विद्यमान सूर्य अ धक प्रभावशाली होता है। सूर्य सप्तमेश है। किन्तु कुम्भ लग्न से इसकी शत्रुता है। इसलिये उक्त कुण्डली वाले जातक को अपने नाम से लाँटरी टिकट न खरीद कर पत्नी के नाम से उसी के द्वारा टिकट खरीदनी चाहिए।

सूर्य के अधिक शक्तिशाली होने के कारण भाग्योदय का सम्बन्ध पूर्व दिशा से है: क्योंकि सूर्य पूर्व में उदित होता है। इसलिए उचित यह है कि जिस राज्य में रहते हों उससे पूर्व दिशा के राज्य की लांटरी खरीदना लाभदायक होता है।

लाँटरी क्रय करने में यह देखना आवश्यक है कि जिसके नाम से लाँटरी खरीदी जाय उस के नाम का प्रथम अक्षर और जिस प्रदेश की लाँटरी खरीदनी हो उसके नाम का प्रथम अक्षर मिला कर देखें कि

दोनों के राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हैं या नहीं ? यदि वे परस्पर मित्र न होंगे तो भी लाटरी फलना कठिन होगा। यहाँ नामाक्षरों के वर्गों का वर्णन करना विषय को समझने मे अधिक सहायक हो सकता है—

वर्ग-वैर तालिका--

नामाक्षर	वर्ग	शत्रु
अ इ उ ए	गरुड़	सूर्य
क ख ग घ ङ	बिलाव	चूहा
च छ ज झ ञ	सिंह	मृग
ट ठ ड ढ ण	श्वान	मेष
त थ द ध न	सूर्य	गरुड़
प फ ब भ म	चूहा	बिलाव
य र ल व	मृग	सिंह
श ष स ह	मेष	श्वान

उक्त व्यक्ति वर्गों के अनुसार दखें कि लॉटरी खरीदने वाले व्यक्ति के नाम का अक्षर किस वर्ग मे आता है और प्रदेश के नाम का अक्षर किस वर्ग मे ? केवल मित्र वर्ग में रहना ही लाभकर है। किसका किस से वैर है यह उक्त तालिका से स्पष्ट रूप में आ ही जाता है।

लॉटरी की तारीख-.-

अब यह देखना है किस सीरीज का टिकट खरीदा जाय ? टिकटों पर ए. बी, सी. डी, ई, आदि अक्षर अंकित देखे जाते हैं। इनका हिन्दी रूपान्तर अ, ब, स, द, इ आदि होता है। इनका मिलान अपने नाम के प्रथम अक्षर से उक्त वर्ग तालिका के अनुसार ही कीजिए यदि नाम के प्रथम अक्षर और सीरीज के अक्षर में शत्रुता न हो तो टिकट खरीद लिया जाय। नाम और सीरीज का शत्रुता वाला टिकट नहीं खरीदना चाहिए।

अंकों के अनुसार फल-

लॉटरी टिकटों पर जो नम्बर छपे रहने हैं, वे भी अपने अनु. कूल होने चाहिए। यदि नम्बर अपने भाग्य सम्बन्धी प्रगति से मेल नहीं खाते तो भी उससे लाभ सम्भव नहीं होता।

इसकी अनुकूलता जानने के लिए जातक को अपनी जन्म तारीख देखनी चाहिए। जिस तारीख में जन्म हुआ हो उसकी गिनती का योग होने पर टिकट शुभ होती है। इसका नियम यह है कि अपने जन्म की तारीख, मास और सन के अंकों को मिला कर जोड़िये। मान लीजिए कि जातक का जन्म १—१—१९४२ का है तो इसका जोड़ इस प्रकार लगेगा—

१+१+१+९+४+२+१८=९

अभिप्राय यह है कि आपकी जन्म तिथि का योग १८ हुआ, जिससे आत्मांक निकालने के लिए १८ के १+८ का जोड़ ९ हुआ, बस यही आपका आत्मांक है। यदि टिकट के नम्बरों का जोड़ भी इसी प्रकार बैठता हो तो वह बहुत अनुकूल योग समझा जायगा। जैसे कि मान लीजिए कि टिकट की संख्या निम्न हैं—

२+१+ +४+२+४+१+९+१=१८

तो इसका आत्मांक भी ९ ही हुआ। अथवा अन्य संख्या से भी १८ का जोड़ आ सकता है। जिस संख्या से भी १८ का जोड़ आता हो वही संख्या जातक का आत्मांक बनायेगी।

लॉटरी खरीदने की तारीख-

अब कुछ विचार लॉटरी खरीदने की तारीख के विषय में भी कर लें। जन्म की तारीख में टिकट खरीदना अधिक शुभ होता है। यदि जन्म दिन के अतिरिक्त अन्य दिनों में टिकट खरीदना हो तोअपने मूलांक वाले दिन खरीदना हितकर होगा। मुलांक इस प्रकार निश्चित होगा—

जन्म तारीख	अंक-गुणा	मूलांक
१	—	१
२	—	२
३	—	३
४	—	४
५	—	५
६		६
७	—	७
८	—	८
९	—	९
१०	—	१
११	१ + १	२
१२	१ + २	३
१३	१ + ३	४
१४	१ + ४	५
१५	१ + ५	६
१६	१ + ६	७
१७	१ + ७	८
१८	१ + ८	९
१९	१ + ९ = १०	१
२०	—	२
२१	२ + १	३
२२	२ + २	४
२३	२ + ३	५
२४	२ + ४	६
२५	२—५	७
२६	२ + ६	८
२७	२ + ७	९
२८	—	१
२९	२ + ९ = ११ = १ + १	२
३०	—	३
३१	३ + १	४

यह तालिका समझने में कुछ कठिन नहीं है। जिस अंक पर बिन्दु है, उसके बिन्दु को शून्य मानने पर अंक शेष रह जाता है। अभिप्राय यह है कि १० तारीख में जन्म है तो बिन्दु हटाकर मूलांक उसी प्रकार १ होगा, जिस प्रकार कि १ तारीख में जन्म लेने वाले का इसी प्रकार १९ (१+९=१०=१) तथा २८ (२=८+१०=१) तारीखों में जन्म लेने वालों का भी मूलाँक १ ही रहेगा।

यह अब स्पष्ट हो गया कि किसी भी मास की १, १०, १९ और २८ तारीख में जिनका जन्म हुआ, उनका मूलाँक १ ही होगा। इसी प्रकार किसी मास की २, ११, २० और २९ तारीख में जन्म लेने वालों का मूलाँक २ होगा। इसी प्रकार अन्य तारीखों मे उत्पन्न हुए व्यक्तियों के मूलांक के विषय मे समझिये।

मूलांक और कार्यारम्भ की तारीख की समानता अत्यन्त शुभ और अनुकूल रहती है। इसलिए अपने मूलाँक वाली या मूलांक का योग प्रस्तुत करने वाली तारीख में टिकट खरीदना लाभकर होगा।

अब यह भी समझना उचित होगा कि किस तारीख में जन्म लेने वाले व्यक्ति को कौन-सा बार और कौन-सा मास अधिक शुभ रहेगा ? इसकी तालिका निम्न प्रकार है—

जन्म तारीख	बार	मास
१	रवि	मार्च
२	चन्द्र	जुलाई
३	गुरु	नवम्बर
४	रवि	जनवरी
५	बुध	दिसम्बर
६	शुक्र	फरवरी
७	चन्द्र	अप्रैल
८	शनि	जून
९	मंगल	सितम्बर
१०	रवि	मई

११	चन्द्र	अगस्त
१२	गुरु	अक्टूबर
१३	रवि	मार्च
१४	बुध	जुलाई
१५	शुक्र	नवम्बर
१६	चन्द्र	जनवरी
१७	शनि	दिसम्बर
१८	मंगल	फरवरी
१९	रवि	अप्रेल
२०	चन्द्र	जून
२१	गुरु	सितम्बर
२२	रवि	मई
२३	बुध	अगस्त
२४	शुक्र	अक्टूबर
२५	चन्द्र	मार्च
२६	शनि	जुलाई
२७	मंगल	नवम्बर
२८	रवि	जनवरी
२९	चन्द्र	दिसम्बर
३०	गुरु	फरवरी
३१	रवि	अप्रैल

अभिप्राय यह है कि जिसका जन्म १ तारीख में हुआ, उसके लिए रविवार और वर्ष में मार्च का महीना अधिक श्रेष्ठ है। इसलिए १ तारीख में जन्म लेने वाले व्यक्ति यदि मार्च मास के किसी भी रविवार के दिन लाँटरी खरीदें तो अधिक आशा हो सकती है।

भाग्योदय वर्ष--

यदि लाँटरी खरीदने में उक्त योगों के साथ भाग्योदय वर्ष का योग भी हो तो फिर सोने मे सुगन्ध वाली उक्ति का चरितार्थ होना ही समझिये। आगामी सन् २००० ई० तक के वर्षों का वर्णन किया जाता है—

मूलांक १	**आगामी भाग्योदय वर्ष**
	१९८१
	१९९०
मूलांक २	१९८२
	१९९१
	२०००
मूलांक ३	१९८३
	९९२
मूलांक ४	१९८४
	१९९३
मूलांक ५	१९८५
	१९९४
मूलांक ६	१९७७
	१९८६
	१९९५
मूलांक ७	१९७८
	१९८७
	१९९६
मूलांक ८	१९७९
	१९८८
	१९९७
मूलांक ९	१९८०
	१९८९
	१९९८

इस प्रकार आकस्मिक लाभ विशेष कर लाँटरी आदि के द्वारा धन प्राप्तिके विषयमें बहुतही सरल एवं बोध गम्य विवेचन कर दिया

गया है। इनमें से जितने सुयोगों का समावेश हो सके उतना ही अच्छा है। अब पुनः ग्रह योग के विषय पर आते हैं—

।। सफलतादायक ग्रह योग ।।

शुभदायक सूर्य—

पहिले भी कह चुके है कि सूर्य प्रबल हो तो सब प्रकार से भाग्य जगाने में सहायक होता है। सूर्य यदि और राहु एक साथ किसी शुभ स्थान पर शुभ द्रष्ट पर रूप से बैठे हो तो कामना सफल होनेमें बाधाएं उपस्थित नहीं होती। विशेष कर सूर्य पर शनि दृष्टि नहीं होनी चाहिए क्योंकि शनि की दृष्टि तो सामान्य रूप से ही धन-हीन बनाने वाली है तब लाँटरी का योग ही कैसे बनने देगी ?

यदि सूर्य की स्थिति तृतीय भाव में हो तो भी आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति का योग बना सकती है। यह योग जातक को २१ से २७ वर्ष की आयु में अधिक सफलताप्रद हो सकता है।

सूर्य का पंचम भाव में स्वगृही, मित्रगृही और शुभ द्रष्ट तथा शुभ युक्त होना भी सट्टा, लाँटरी, रेस आदि मे धन की प्राप्ति कराने वाला होता हैं। यह धनागम अन्य मार्ग भी खोल देता है। षष्ठ भावस्थ, उच्चस्थ, स्वक्षेत्री तथा शुभ युक्त और शुभ द्रष्ट हो तो भी इसी प्रकार का लाभ उपस्थित कर सकता है।

नवम भाव में भी सूर्य की शुभ स्थिति इस प्रकार का योग बनाती है। उच्चस्थ सूर्य अधिक हितकर रहता है। साथ ही शुभ युक्त और शुभ दृष्ट भी होना चाहिए।

दशम भावस्थ सूर्य इस प्रकार के योग में कुछ अधिक सहायक होता है। किन्तु यह स्थिति तब अधिक लाभकारी होती है जबकि सूर्य मगल की राशि में हो। बुध की राशि में हो तो भी अभीष्ट सिद्धि तो सम्भव है, किन्तु बड़ी राशि के रूप में नहीं। किन्तु शनि की राशि हो तो हानिकारक ही समझिये।

एकादश भाव मे सूर्य का बुध की राशि में होना भी आकस्मिक धन का कुछ योग बनाता है। किन्तु नीचस्थ या अशुभ योग वाला एकादशस्थ सूर्य विपरीत भी अधिक रहता है।

चन्द्रमा के योग--

चतुर्थ भाव में उच्चस्थ या स्वक्षेत्री चन्द्रमा भी अभीष्ट पूर्ति में सहायक रहता है। यदि शुभयुक्त और शुभद्रष्ट है तो जातक का विवाह के पश्चात् भाग्योदय होना चाहिए। उसकी यही अवस्था लाँटरी से धन प्राप्ति का सुखद योग बना सकती है। किन्तु चन्द्रमा के साथ बुध भी स्थित हो तो यह चन्द्रमा के सभी हितों को अहिसा में बदल लेता है।

यदि पंचम 'भाव मे पूर्ण चन्द्र योग हो तो हितकर है। यदि चन्द्रमा आदि के द्वारा लाभ सम्भव है।

नवम भाव से उच्चस्थ या स्वक्षेत्री चन्द्रमा भाग्योदय करने वाला होने के कारण आकस्मिक धन प्राप्ति का योग बनाता है। दशम भाव में शुभ एवं बलवान चन्द्रमा २७ वर्ष की या ४३ वर्ष की आयुमें धन की विशेष प्राप्ति कराता है, जो कि लाटरी, सट्टा या अन्य किसी भी प्रकार से होनी चाहिए।

मंगल की मांगलिकता---

उच्चस्थ मंगल लाभकारी हो सकता है। अष्टम भाव में स्वगृही हो तो धनागम के मार्ग अधिक खोलने वाला होने के कारण लाँटरी आदि का योग बनाता है।

यदि मंगल दशमेश हो अपने साथ किसी बलवान ग्रह को बैठाये हो तो इस स्थिति में जातक को भाग्यवान होने का अवसर प्राप्त होता है। यदि मंगल लाभेश से युक्त हों तब तो बहुत उत्तम योग बनाना ही है।

अभीष्ट पूरक बुध---

बुध भी आकस्मिक धन के योग में सहायक हो जाता है। यदि

वह द्वितीय भाव में स्वक्षेत्री शुभ युक्त और शुभ द्रष्ट हो तो जातक को आयु के छत्तीसवें वर्ष से आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग बनाता हैं दशम भाव मे शुभ और स्वक्षेत्री हो तो भी ऐसा ही लाभ हो सकता है। पेंतालीसवाँ वर्ष अधिक हितकर सिद्ध होता है।

लाभदायक गुरु---

उच्चस्थ या स्वक्षेत्री गुरु यदि प्रथम भाव में हो तो लांटरी या सट्टे में धनागम का योग उपस्थित करता है। यदि अष्टम भाव में गुरु बलवान हुआ बैठा हो तो सट्टे या लाँटरी से लाभ हो सकता है। नवम भावस्थ बली गुरु भी इसमें सफलता प्राप्त कराने वाला होता है। दशम भावस्थ शुभ एवं बली गुरु जातक को नौ, बारह और उन्नीस वर्ष की आयु में धन प्राप्त कराता है। एकादश भावस्थ गुरु भी अभीष्ट दायक होता है।

धनदायक शुक्र--

द्वितीय भाव में शुभ द्रष्ट, शुभ युक्त तथा स्वगृही शुक्र धन का सहसा लाभ कराता है। पंचम भावस्थ शुक्र सट्टे, लाँटरी में लाभ प्राप्त कराने वाला होता है।

यदि शुक्र की स्थिति नवम भाव में चतुर्थेश अथवा सप्तमेश से युक्त हो तो सहसा सौभाग्यशाली बनाता है। दशम भावस्थ स्वगृही और शुभ द्रष्ट या शुभ युक्त शुक्र विवाह के पश्चात् भाग्योदयकारक होता है।

यदि एकादश भाव में सूर्य के साथ शुक्र अपने शुभयोग में विद्यमान हो राज्य पुरस्कार अथवा राज्य-लाँटरी मे धन की प्राप्ति कराने वाला होता है।

भाग्योदकारक शनि--

शनि को लोग अपने विपरीत ही समझते है, किन्तु बात ऐसी नहीं है। वह भी भाग्योदय में कारण बन सकता है। तृतीय भावस्थ

शनि विघ्न उपस्थित करते-करते भी भाग्योदय कर बैठता है। यह आकस्मिक रूप से प्रचुर परिमाण में अकल्पित धन की प्राप्ति करा देता है। किन्तु चतुर्थ भावस्थ शनि हानिकारक होता है।

दशम भावस्थ शनि भी लाभ कराता है। एकादश भाव में शनि की उच्च स्थिति भाग्यवान बनाने वाली होती है।

भाग्यशाली बनाने वाला राहु---

राहु भी भाग्यवान बनाने में सहायक हो जाता है। यदि वह तृतीय भाव में उच्च गृही हो तो भाग्योदय करता और सहसा प्रचुर परिमाण में धन प्राप्त कराता है।

सप्तम भावस्थ राहु भी सहसा धन का योग तो बनाता है, किन्तु अल्प परिमाण में। अष्टम भावस्थ राहु बार-बार हानि करने पर भी एक बार भाग्योदय कर ही देता है। एकादश भाव में स्थित राहु भी इस प्रकार सामान्य योग बनाता है।

धनदायक केतु–

नवम भाव में केतु स्थित हो और शुभ युक्त या शुभ द्रष्ट तथा उच्चस्थ या स्वगृही रूप से स्थित हो तो जातक के लिए धनागम के मार्ग प्रशस्त करता है, इस कारण आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति योग बनाता है।

एकादश भाव में भी केतु की स्थिति इसी प्रकार से लाभदायक और सुखकर होती है।

नवग्रह के अतिरिक्त आधुनिक विचारक दो अन्य ग्रह भी मानते है। वे हैं—हर्षल और नेपच्यन। इनकी लाभजनक स्थिति पर प्रकाश डालना भी उचित होगा—

हर्षल (प्रजापति, वरुण)–

हर्षल की द्वितीय भाव में शुभ स्थिति हो अथवा सूर्य, चन्द्रमा और गुरु के साथ युति हो तो लॉटरी, रेस, शेयर तथा अन्याय

प्रकार से भी आकस्मिक लाभ के अनेक अवसर प्राप्त कराती है। यदि एकादश भाव में हर्षल के साथ दशमेश की युति हो तो जातक परदेश में भाग्योदय होता है।

नेपच्यून (इन्द्र, वारुणी)–

दूसरे भाव में शुभ स्थिति वाला नेपच्यून सहसा धन-प्राप्ति का योग उपस्थित करता है। इससे सट्टे, लाटरी, रेस आदि के द्वारा लाभ सम्भावनाएँ रहती हैं।

सप्तम भाव में नेपच्यून शुभ रूप से स्थित हो तो वह भाग्यहीन मनुष्य को भी लाटरी आदि के द्वारा धन प्राप्त कराकर भाग्यशाली बना देता है। 

आकस्मिक धन, भूमि मकान के योग

पुरस्कारादि के योग–

(१) यदि पंचम भाव में चन्द्रमा की शुभ रूप से स्थिति हो और शुक्र उसे देखता हो तो जातक को लाटरी, सट्टा, जुआ, रेस आदि से आकस्मिक धन प्राप्त होता है।

( ) यदि धन भाव में बृहस्पति हो तो जातक को प्रकाण्ड विद्वान बनाता और लेखन कृतियों पर पुरस्कार दिलाता है।

(३) यदि एकादशेश अपने गृह में ही तथा धनेश अपने गृह में तो यह काव्य-रचना पर पुरस्कार दिलाने वाला योग होगा। साथ ही उक्त दोनों ग्रह शुभ दृष्ट तथा शुभ युक्त होने चाहिए। अन्यथा योग-हानि होगी।

(४) यदि अष्टमेष और तृतीयेश उच्चस्थ या स्वगृही तथा शुभ दृष्ट रूप से एक ही भाव में विद्यमान हों तथा धन भाव में और एकादश भाव में भी शुभ ग्रह हों तो यह योग वैज्ञानिक आविष्कार पर पुरुस्कार प्राप्त कराने वाला होगा।

(५) यदि लग्नेश और चतुर्थेश दोनों ही चतुर्थभाव में एक साथ विद्यमान हों तो आकस्मिक रूप से श्रेष्ठ भवन की प्राप्ति होना सहज सम्भव है।

(६) यदि चतुर्थेश धनेश के साथ हो अथवा धन भाव में बैठा हों तो सहसा भूमि, खेती, भवन आदि की प्राप्ति होती है।

(७) यदि चतुर्थेश ग्यारहवें भाव में हों तो भी यही फल मिलेगा

(८) यदि दशमेश चतुर्थेश भाव में और चतुर्थेश दशम भाव में हों तो भी उक्त फल मिलना चाहिए।

(९) यदि चतुर्थेश वृहस्पति और शुक्र से युक्त या द्रष्ट हुआ केन्द्र या त्रिकोण में विद्यमान हों तो भी स्थावर सम्पत्ति की प्राप्ति का सबल योग समझिये।

(१०) यदि चतुर्थ भाव में कोई शुभ ग्रह हों और उसे कोई मित्र ग्रह देखता हो तो भी जमीन जायदाद की प्राप्ति का सुखद योग बनेगा।

(११) यदि चतुर्थ भाव में स्थित चतुर्थेश मंगल वृहस्पति द्वारा द्रष्ट हों तो भी मकान मिलता है।

(१२) यदि चतुर्थेश केन्द्र या त्रिकोण में विद्यमान हो तो यह भी सहसा स्थावर सम्पत्ति का योग है।

(१३) यदि चतुर्थेश दूसरे या ग्यारहवें भाव में हों तो भी ऐसा ही योग बनेगा।

(१४) यदि चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि हो तो बँटवारे में चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

(१५) यदि चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि हों तो भी उक्त फल ही होगा।

(१६) यदि छठे भाव में बुध की राशि हो और उसमें विद्यमान लग्नेश यदि शुभ बुध के द्वारा देखा जाता हो तो जातक को नाना-मामा से चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

माता-पिता से धन प्राप्ति के योग---

(१) यदि चपुर्थेश शुभ ग्रह हो अथवा चतुर्थ भाव शुभ युक्त और शुभ द्रष्ट हो तो माता का पूर्ण सुख प्राप्त होगा और अन्त में माता की चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

(२) यदि चतुर्थ भाव मे चतुर्थेश और चन्द्रमा दोनो ही विद्यमान हों तो भी जातक को माता की चल-अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है।

(३) यदि चतुर्थेश, षष्ठ, अष्टम और द्वादश भाव मे विद्यमान हो तो जातक को पितृ-सुख की प्राप्ति होती है।

(४) यदि दशमेष शुभ ग्रहों के मध्य में स्थित हो तो जातक को अधिक पितृ सुख और पितृधन प्राप्त होता है।

(५) यदि दशमेष शुभ ग्रह हो तथा उपग्रह से युक्त अथवा द्रष्ठ हो तो भी अधिक पितृ सुख और पितृधन का योग बनेगा।

(६) यदि दशमेश वृहस्पति और शुक्र के साथ विद्यमान हों तो भी पितृ सुख और पितृधन की प्राप्ति होती है।

(७) यदि नवमेश नीचस्थ और व्ययेश नवमस्थ हो तो जातक के पिता की सोलह वर्ष की आयु मे मृत्यु होती और पितृधन प्राप्त होता है।

(८) यदि नवमेश अत्युच्च का हो तो जातक को अधिक पितृ सुख प्राप्त होता है।

ससुराल से धन प्राप्ति के योग-

(१) यदि सप्तम भाव में चतुर्थेश और चतुर्थ भाव में शुक्र हो तथा इन दोनों में पारस्परिक मित्रता हो तो यह योग ससुराल से धन प्राप्त कराने वाला होगा।

(२) यदि धनेश सबल हो और सप्तमेश के साथ हो तथा शुक्र भी उसके साथ हो या उसे देखता हो तो यह योग भी प्रश्नकर्त्ता को उक्त लाभ कराने वाला होगा।

(३) यदि धनेश और सप्तमेश दोनों ही लग्न भाव या चतुर्थ भाव मे हो तो ससुराल से धन दिलायेंगे।

(४) यदि धनेश और सप्तमेश पंचम भाव या सप्तम भाव में हो तो भी उक्त फल होगा।

(५) यदि धनेश और सप्तमेश नवम, दशम या एकादश भाव में हो तो भी उक्त लाभ वाला योग समझिये।

(६) धनेश का चन्द्रमा से सप्तम स्थान में होना भी उक्त फल प्रदर्शित करेगा।

(७) सप्तमेश की चतुर्थ भाव में स्थिति भी ससुराल से धन प्राप्त होने की सूचक है।

(८) यदि धनेश और सप्तमेश दोनों ही तीसरे भाव में हो तो भी उक्त फल होगा।

(९) यदि धनेश और सप्तमेश दोनों सप्त भाव में विद्यमान हो तो यह योग भी उक्त फल का ही सूचक है।

(१०) यदि धनेश और सप्तमेश दोनों एक साथ शुभ राशि में विद्यमान हो और शुक्र उन्हें देखता हो तो समझना चाहिए कि इस योग के प्रभाव ससुराल का धन मिलेगा।

(११) यदि सप्तमेश और नवमेश एक दूसरे को देखते हों तो ससुराल से सामान्य धन प्राप्ति का योग बनेगा।

(१२) यदि सप्तमेश, नवमेश और शुक्र तीनों साथ हों तो भी ससुराल से धन प्राप्त होना चाहिए।

(१३) यदि सातवें और ,चौथे भाव का स्वामी एक ही ग्रह हो और वह सातवें या चौथे में से किसी एक भाव मे विद्यमान हो तो यह योग भी ससुराल से धन प्राप्त कराता है।

(१४) यदि द्वितीयेश सातवें भाव में और सप्तमेश दूसरे भाव मे हो तो भी ऐसा योग समझिये।

वाहन लाभ के योग–

(१) यदि चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ वाहन प्राप्ति का योग बनता है।

(२) यदि शुक्र, चन्द्रमा और चतुर्थेश लग्नेश के साथ भी विद्यमान हों तो उच्च वाहन सुख की प्राप्ति होती है।

(३) यदि शुक्र और चन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में बलवान होकर बैठे हों तो वह उच्च प्रकार के वाहन की प्राप्ति का योग होगा।

(४) यदि चतुर्थेस चन्द्रमा और शुक्र के साथ ग्यारहवें भाव में बैठा हों तो भी उच्च प्रकार के (कार इत्यादि) वाहन की उपलब्धि सम्भव होगी।

(५) यदि शुक्र और चन्द्रमा परस्पर एक दूसरे को देखते हों तो भी उत्तम वाहन मिलेगा।

(६) यदि चतुर्थ भाव में बलवान शुक्र बैठा हो तो भी उच्च प्रकार का वाहन मिलना चाहिए।

(७) यदि दसमेव और चतुर्थेश केन्द्र में हो तो भी जातक को श्रेष्ठ वाहन की प्राप्ति सम्भव है।

(८) यदि लग्नेश और सप्तमेश चौथे भाव में हो तो भी वाहन की प्राप्ति सम्भव है।

(९) यदि चतुर्थेश केन्द्र में विद्यमान हो और उसे कोई शुभ

ग्रह देखता हो या शुभ ग्रह उसके साथ हो तो जातक को उच्च प्रकार के वाहन की प्राप्ति होती है ।

(१०) यदि दशमेश ग्यारहवें भाव में और द्वितीयेश दशम भाव में हों तो भी उच्च वाहन सुख मिलेगा ।

(११) यदि चतुर्थेश केन्द्रस्थ हो और केन्द्रेश लग्न में स्थित हो तो यह भी सहसा वाहन-लाभ का योग होगा ।

(१२) शुक्र के साथ चतुर्थेश का लग्न में होना पुरस्कार में या अन्य प्रकार स उच्च वाहन का योग बनायेगा ।

(१३) शुभ ग्रह के साथ चतुर्थेश का दशम भाव में होना उच्च प्रकार के वाहन-लाभ का सूचक है ।

(१४) चतुर्थेश और नवमेश का लग्न भाव या सप्तम भाव में होना भी वाहन-प्राप्ति व्यक्त करता है ।

गढ़े धन सम्बन्धी योग—

(१) यदि चतुर्थ भाव का भावेश २, ६, अथवा ११ के कारण ग्रहों के नक्षत्र में स्थित हो तो समझना चाहिए कि प्रश्नकर्ता के घर में धन गढ़ा है । किन्तु ध्यान रहे कि चतुर्थ भाव के नक्षत्र का सम्बन्ध मार्गी शनि से हो, वक्री शनि से नहीं होना चाहिए । क्योंकि भूगर्भ का कारक ग्रह शनि है और मार्गी शनि ही धन प्राप्त कराने वाला योग होता है ।

(२) यदि अष्टम भाव में धनेश उच्चस्थ, स्वगृही, शुभ युक्त या शुभ दृष्टि रूप से बैठा हो तो मकान या अन्य अन्य स्थान में गढ़ा हुआ धन प्राप्त होना चाहिए ।

(३) लग्नेश का शुभ ग्रह होना भी गढ़े हुए धन की प्राप्ति कराता है । किन्तु उसे द्वितीय भाव में होना चाहिए, वह भी शुभ दृष्ट रूप से ।

(४) यदि द्वितीयेश और चतुर्थेश दोनों ही शुभ ग्रहों की राशि से बैठे हों तथा उन्हें शुभ ग्रह देखते हों तो जातक को पर्याप्त राशि में गढ़ा धन मिलता है ।

(५) यदि लग्नेश दूसरे भाव में तथा द्वितीयेश ग्यारहवें भाव में और एकादशेश लग्न भाव में हो तो जातक को गड़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

★

विभिन्न स्रोतों से धन-प्राप्ति के ११० योग

(१) यदि शनि धनेश होता हुआ चतुर्थ भाव में बैठा हो तो आकस्मिक धन प्राप्ति का सामान्य योग बनता है।

(२) यदि धनेश शनि चतुर्थ, अष्टम या द्वादश भाव में शुभ रूप से तथा शुभ द्रष्ट और बुध सप्तम भाव में स्वगृही रूप से विद्यमान हो तो आकस्मिक धन प्राप्ति का अतियोग बनेगा।

(३) यदि चतुर्थेश किसी शुभ ग्रह की राशि में शुभ युक्त या शुभ द्रष्ट बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता को अकल्पित रूप से सहसा धन की प्राप्ति सम्भव होती है।

(४) यदि लग्नेश लाभेश के भाव में और लाभेश लग्नेश के भाव में बैठा हो तो गरीब जातक भी अपनी तैंतीस वर्ष की आयु में सहसा धनवान हो जाता है।

(५) यदि धनेश नवम भाव में और नवमेश धन भाव में हो तो जातक कैसी भी परेशानी में हो उसे बत्तीस, वर्ष की आयु में पर्याप्त परिमाण में धन-लाभ होना चाहिए।

(६) यदि नवमेश लग्न भाव में और लग्नेश नवम भाव में हों तो भी आकस्मिक धन-लाभ का योग समझिये।

(७) यदि नवमेश अपने ही स्थान में रहकर गुरु से द्रष्ट हो तो छत्तीस वर्ष की आयु में सहसा धन प्राप्त होता है।

(८) यदि नवमेश स्वगृही न होकर उच्चस्थ हो तथा गुरु द्वारा देखा जा रहा हो तो भी जातक का आकस्मिक रूप से धन प्राप्त कराने वाला होगा।

(९) जिस नवांश में लग्नेश की स्थिति हो, उस नवांश का अधिपति यदि गोपुरांश में विद्यमान हो और उसे दशमेश देखता हो तो सहसा धन प्राप्त होना चाहिए।

(१०) यदि जन्म काल में लग्नेश, नवांशश और भाग्येश तीनों परम उच्च अंशों में हों तथा एकादशेश वैशेषिकांश मे आ गया हो तो इसका अर्थ जातक को सहसा ही करोड़ाधीश बनने का अवसर प्राप्त होता है।

(११) यदि कर्क लग्न में मंगल युक्त चन्द्रमा जातक को धनी बनाता है। यदि जातक निर्धन है तो उसे सहसा धन की प्राप्ति होगी

(१२) कर्क लग्नस्थ चन्द्रमा मंगल से द्रष्ट हो तो भी ऐसा ही फल प्रदर्शित करेगा।

(१३) पंचम भाव मे मीन राशि के गुरु की शुभ रूप से स्थिति और एकादश भाव में चन्द्र और बुध की युति जातक को सहसा बहुत धन की प्राप्ति होती है।

(१४) पंचम भाव में धनु राशि का गुरु भी उक्त योग के साथ ऐसा ही फल प्राप्त कराता है।

(१५) लाभेश का दशम भाव में शुभ युक्त या शुभ द्रष्ट होना पर्याप्त आकस्मिक धन प्राप्त कराता है।

(१६) लाभेश का लग्न भाव में होना भी इसी प्रकार के फल का सूचक है।

(१७) नवम भाव में मकर राशिस्थ मंगल जातक को सहसा धन प्राप्त कराता है।

(१८) लग्नेश से युक्त दशमेश केन्द्र या त्रिकोण भावों में हो

तो चाहे अपने ही बुद्धिमान से हो, पर्याप्त मात्रा में धन की प्राप्ति होती और भाग्योदय होता हैं।

(१६) नवमेश का स्वगृही या उच्चस्थ तथा गुरु से दृष्ट होना छत्तीस वर्ष की आयु में भाग्योदय द्वारा धन-प्राप्ति का योग उपलब्ध करांता है।

(२०) लाभेश का चतुर्थ पंचम, सप्तम, अष्टम नवम भाव में स्थित होना आकस्मिक धन-लाभ का योग वनाता है।

(२१) नवम भाव में मीन का गुरु पंचमेश के साथ बैठा हो तो सहसा धनवान वनाता है।

(२२) नवम भाव में धनु का गुरु यदि शुक्र के साथ स्थित हो तो जातक को आकस्मिक धन-लाभ होता है।

(२२) पांचवें भाव में कर्क राशिस्थ चन्द्रमा भी पर्याप्त धन का योग उपस्थित करता है।

(२३) वृश्चिक लग्न में मंगल का लग्नस्थ होकर वृहस्पति और चन्द्रमा के द्वारा देखा जाना उक्त प्रकार का फल दिखाता है।

(२५) मेष लग्न में लग्नस्थ मङ्गल गुरु-चन्द्र की दृष्टि से युक्त हो तो भी सहसा धन-प्राप्ति का योग बनायेगा।

(२६) यदि लग्नस्थ सिंह राशि में स्थित सूर्य गुरु से दृष्ट हो तो भीं उक्त लाभ होगा।

(२७) लग्नस्थ सिंह राशि का सूर्य यदि शुक्र द्वारा देखा जाय तो भी ऐसा ही फल समझिये।

(२८) लाभेश सूर्य हो तो धनागम अत्यन्त प्रभावशाली योग उपस्थित करेगा।

(२६) लाभ स्थान पर सूर्य की पूर्ण दृष्टि भी ऐसा फल प्रदर्शित करता है।

(३०) यदि लाभेश मङ्गल हो तो भी सहसा पर्याप्तधन की प्राप्ति सम्भव होती है।

(३१) लाभ स्थान पर मंगल और गुरु की दृष्टि भी सहसा धन-प्राप्ति का योग बनाती है।

(३२) बुध का लाभ स्थान में होना राज्य के श्रोत से सहसा धन प्राप्ति का योग बनाता है।

(३३) लाभेश बुध हो तो भी ऐसा योग समझिये।

(३४) लाभेश शुक्र भी ऐसा ही योग बनाता है।

(३५) लाभेश कोई शुभग्रह हो और वह ग्यारहवें भाव में विद्यमान हो प्रचुर धन का योग प्रस्तुत करेगा।

(३६) किसी भी शुभग्रह लाभेश का केन्द्र या त्रिकोण में हो तो किसी सुहृद मित्र से पर्याप्त धन की प्राप्ति होगी।

(३७) शुभ ग्रह लाभेश का दशम भाव में और दशमेश का नवम भाव में होना सहसा प्रचुर परिणाम में धन-लाभ कराता है।

(३८) ग्यारहवें भाव में गुरु की स्थिति या गुरु की दृष्टि आकस्मिक रूप से अत्यन्त धनवान बना देती है।

(३९) भाग्येश का अपने भाव में होना तथा उसे किसी शुभ ग्रह द्वारा देखा जाना सहसा लाभ कराता है।

(४०) यदि धनेश कोई शुभ ग्रह हो और वह केन्द्र या त्रिकोण में हों तो भी ऐसा ही लाभ होता है।

(४१) धनेश का केन्द्र में और लाभेश का त्रिकोण में रहकर गुरु, शुक्र होना भी उक्त प्रकार से ही लाभकारी है।

(४२) ग्यारहवें भाव में शनि या राहु प्रभृति क्रूर या पाप ग्रहों की स्थिति सहसा धनागम योग बनाती है।

(४३) ग्यारहवें भाव में शनि स्थित हो अथवा शनि ग्यारहवें भाव को देखता हो किसी दूषित कर्म से सहसा धन-प्राप्ति सम्भव है।

(४४) एकादशेश का तीसरे भाव में और तृतीयेश का ग्यारहवें भाव में विद्यमान होना जातक के स्वयंबुद्धि-बल से सहसा धन-लाभ का कारण हो सकता है।

(४५) लग्नेश और नवांशेश दोनों का एक साथ केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होना और वृहस्पति के द्वारा देखा जाना जातक को सहसा धनवान बना देने का प्रबल चिन्ह है।

(४६) पाँचवें भाव में वृष राशि पर शुक्र और बैटे हों तथा ग्यारहवें भाव मे शनि हो उक्त जैसा फल समझिये।

(४७ पाँचवें भाव में तुला राशि पर उक्त योग भी उक्त फल प्रदर्शित करेगा।

(४८) यदि द्वितीयेश और एकाशेश के साथ त्रिशांशेश और नवाँशेश केन्द्र या त्रिकोण में वैशेषिक मे हो तो जातक अन्य धन-प्राप्ति का अवसर उपलब्ध करता है।

(४६) यदि पंचम भाव में सिंह राशि पर सूर्य विराजमान हो और एकदश भाव में वृहस्पति विद्यमान हो तो यह भी जातक को सहसा धनिक बना देता है।

(५०) यदि पंचम भाव में मिथुन राशि पर बुध हो और ग्यारहवें भाव में मंगल और चन्द्रमा हो तो अधिक धन मिलता है।

(५१) यदि पंचम भावस्थ कन्या राशि पर बुध हो तथा ग्यारहवें भाव में उक्त योग हो तो भी उक्त फल समझिये।

(५२ यदि पंचम भाव में मकर राशि पर शनि और ग्यारहवें भाव में कर्क राशि पर चन्द्रमा हो तो बहुत धन प्राप्त होगा।

(५३) यदि पंचम भाव में कुम्भ राशिस्थ शनि एकादश सिंह राशि पर सूर्य हो तो भी उक्त फल मिलेगा।

(५४) यदि मकर लग्न में शनि की स्थिति हो और उस पर बुध और शुक्र की दृष्टि पड़ रही हो तो यह योग जातक को पर्याप्त मात्रा में धन प्राप्त कराता हैं।

(५५) यदि कुम्भ लग्न में शनि बुध और शुक्र तीनों की युति हो तो भी उक्त फल होता है।

(५६) यदि धनु लग्न में बुध, शुक्र के साथ गुरु बैठा हो तो यह योग भी जातक को अत्यन्त धनी बनाता है।

(५७) यदि गुरु की स्थिति बुध और शुक्र के साथ मीन लग्न में हो तो भी उक्त फल होगा।

(५८) यदि जन्म कुण्डली में लग्नेश, धनेश और लाभेश की स्थिति वैशेषिकांशमें हो तो भी जातक को पर्याप्त परिमाण में धनप्राप्त कराने वाला होगा।

(५९) यदि जन्म समय लग्नेश, द्रेष्काणेश और सप्तमेश एक साथ वैशेषिकांश को प्राप्त हुए हो तो जातक को आकस्मिक रूप से भी धन-प्राप्ति का योग बनायेंगे।

(६०) जन्मकाल में दशमेश, नवांशेश और सप्तांशेश एकत्र एव बलवान हों और साथ ही उन पर शुक्र और वृहस्पति की दृष्टि हो तो धन प्राप्ति का प्रबल योग समझिये।

(६१) जन्मकाल में यदि द्वितीयेश, द्रेष्काणेश और सप्ताशेश तीनों एक साथ रहकर पूर्ण बलवान होगये हों तो यह योग भी उक्त योग के ही समान बलवान है।

(६२) जन्मकाल में द्वितीयेश और एकादशेश का वृद्धि केन्द्र में विद्यमान होना तथा नवमेश का बली होना भी उक्त प्रकार जैसा ही प्रभावशाली योग है।

(६३) जन्मकाल में द्वितीय तथा एकादश भाव बुधके षष्ठाश से युक्त हों और द्वितीयेश तथा एकादशेश भी अपने-अपने गृहमें स्थित हों सहसा भाग्योदय करके अत्यन्त धनवान बनाने वाला योग समझिये।

(६४ जन्मकाल में चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह स्थित हों तथा पारावतांश या सिंहासनांद में हों तो समझना चाहिए कि प्रश्नकर्त्ता बहुत धनवान बन जायेगा।

(६५) जन्मकालमें कर्मेश, द्रेष्काणेश और सप्तांशेष यदि तीनों

ही एकत्र होकर ऐरावतांश को प्राप्त हुए हों तो जातक को अवश्य ही पर्याप्त धन मिलना चाहिए।

(६६) यदि भाग्येश केन्द्र वा त्रिकोण में हों और एकादेश साथ वैशेषिकांश मे विद्यमान हो तो यह योग जातक को अत्यन्त धनवान बनाता है।

(६७) शुक्र का वृष लग्न में शनि-बुध से द्रष्ट होना भी सामान्यतः उक्त फल दिखाता है।

(६८) यदि तुला लग्नस्थ शुक्र शनि और बुध के साथ बैठा हो तो यह योग धनागम के स्रोत खोलता है।

(६९) कन्या लग्नस्थ वृहस्पति का चन्द्रमा द्वारा देखा जाना धन-प्राप्ति का शुभ योग बनाता है।

(७०) मिथुन में स्थित वृहस्पति को चन्द्रमा देखता हो तो भी ऐसा ही फल होगा।

(७१) यदि नवम भाव मे लाभेश और लाभ भाव में नवमेश हों तो भी अधिक फल प्राप्ति का योग होगा।

(७२) यदि लाभेश शुभ ग्रह तथा लाभ स्थान में ही हो और शुभ ग्रह या शुभ द्रष्ट हो तो यह योग भी जातक को प्रचुर परिमाण में धन प्राप्त कराता है।

(७३) यदि नवमेश केन्द्र में शुभ द्रष्ट या शुभ युक्त बैठा हो तो धनवान बनाने वाला योग समझिये।

(७४) यदि लग्न में लाभेश और लाभ स्थान में लग्नेश हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो यह योग प्रश्नकर्त्ता को अकल्पित धन की प्राप्ति में सहायक होता हैं।

(७५) सूर्य का दशम भाव में स्थित होना जातक को सहसा पर्याप्त धन कराने वाला लक्षण है।

(७६) यदि दशमेश हो तो भी आकस्मिक धन प्राप्ति के पक्ष में श्रेष्ठ योग समझिये।

(७७) यदि दशम भाव में मकर राशि हो और उसमें मंगल की स्थिति हो तो भी उक्त फल सम्भव है।

(७८) द्वितीय भाव में गुरु की स्थिति और उस पर शनि की दृष्टि जातक को सदा धन प्राप्त कराने वाली होती है।

(७९) द्वितीय भाव में सूर्य की स्थिवि भी उक्त फल वाली होती है। किन्तु उस पर शनि की दृष्टि नहीं होनी चाहिए।

(८०) द्वितीय भाव में चन्द्रमा शनि से दृष्ट हो तो सामान्य धन की प्राप्ति सम्भव है।

(८१) द्वितीय भाव में शनि द्वारा द्रष्ट बुध भी ऐसा ही फल प्रदर्शित करेगा।

(८२) द्वितीय भाव में चन्द्रमा, नवम भाव में शुक्र और एकादश भाव में वृहस्पति अत्यन्त धन-लाभ का योग प्रस्तुत करते हैं।

(८३) यदि द्वितीयेश वृहस्पति मगल के साथ विद्यमान हो तो सहसा धन-लाभ कराता है।

(८४) द्वितीय भाव में स्थित शनि पर बुध और वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक को युवावस्था या उसके पश्चात् पर्याप्त परिमाण में धन की प्राप्ति होनी चाहिए।

(८५) यदि द्वितीय भावस्थ शनि को बुध ही अपनी पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उक्त फल सम्भव है।

(८६) यदि द्वितीय भाव में कोई उच्च राशि और उच्चांश के धनवान बनाने वाला होगा।

(८७) यदि धनेश लग्न, चतुर्थ या पंचम स्थान में रहकर वृहस्पति के द्वारा देखा जा रहा हो तो यह योग प्रश्नकर्त्ता के भाग्योदय में सहायक तथा प्रचुर धन प्राप्त कराने वाला है।

(८८) यदि धनेश सप्तम, नवम या दशम भाव में गुरु से द्रष्ट हो तो उक्त फल समझिये।

*(८९) यदि धनेश केन्द्रभाव में और लाभेश त्रिकोण में हो और गुरु, शुक्र से युक्त अथवा द्रष्ट हो तो इसका अर्थ प्रश्नकर्त्ता को पर्याप्त धन की प्राप्ति होगी।

(९०) यदि सिंह में मंगल तथा मिथुन में राहु की स्थिति हो तो जातक को उसके पिता का समूचा धन मिलेगा।

(९१) चन्द्रमा और शनि का नवम भाव में उच्चस्थ होना सहसा धन प्राप्ति का सूचक है।

(९२) यदि नवम भावस्थ चन्द्रमा और मंगल उच्च राशिस्थ हो तो उक्त फल ही समझिये।

(९३) नवमे भाग पाँच शुभ ग्रहों का एक साथ स्थित होना अत्यन्त धन प्राप्ति का योग होगा।

(९४ यदि धनेश की स्थिति केन्द्र में हो और लग्नेश उसे देखता हो तो उक्त फल होगा।

(९५) लग्नेश या नवमेश का केन्द्र भाव में होना भी प्रचुर, मात्रा में धन-प्राप्ति का लक्षण है।

(९६) लग्न में उच्च राशि और उच्चांश का बुध, वृहस्पति या शुक्र हो तो पर्याप्त धन मिलता है।

(९७) यदि लग्नेश, पचमेश नवमेश, और एकादशेश उच्च राशिस्थ तथा उच्चांश के होकर स्वगृह में हों तो यह योग आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति अति प्रबल योग होगा।

(९८) यदि लग्नेश शुभ ग्रह होकर लग्नभाव में शुभ उच्च राशि में या मित्रगृह में हो तो ऐसा जातक किसी भी आयु में सहसा धन प्राप्ति सुअवसर ले सकता है।

(९९) यदि लग्नेश चतुर्थ, सप्तम या दशम में उच्चस्थ या स्व-राशिस्थ होता हुआ मूल त्रिकोण में स्थित हो और उसे कोई पाप ग्रह न देखता हो तो धन प्राप्ति का प्रबल योग समझिये।

(१०१) यदि कन्या लग्न में मङ्गल-बुध, मकर राशि में शनि, ग्यारहवें भाव में शुक्र और गुरु की स्थिति हो तो भी आकस्मिक रूप से धन-प्राप्ति का एक प्रबल होगा।

(१०१) यदि धन भाव में तृतीयेश और तृतीया भाव में धनेश तो महसा श्रेष्ठ धन मिलता है।

(१०२, यदि तृतीय भाव मे तृतीयेश और दशमेश दोनों एक ही साथ हों तो अत्यन्त धनी बनाने वाला योग समझिये।

(१०३) यदि नवम भाव में चतुर्थेश की स्थिति गुरु, शूक्र से युक्त हो तो यह भी एक सुन्दर योग होगा।

(१०४) चतुर्वेश का नवम भाव में गुरु शुक्र द्वारा द्रष्ट होना भी उक्त योग बनाता है।

(१०५) नवम भाव में शुभ ग्रहों की स्थिति और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो इच्छित धन की उपलब्धि सम्भव है।

(१०६) यदि नवम भाव में कोई पाप ग्रह उच्चस्थ रूप से हो और वृहस्पति उसे पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो यह योग प्रश्नकर्त्ता को धनवान बनाने वाला होगा।

(१०७) यदि लग्न भाव में उच्च का वृहस्पति हो और अन्य सभी ग्रह हों तो भी जातक को आकस्मिक रूप से पर्याप्त धन की प्राप्ति होती है।

(१०८) यदि द्वादश भाव में मङ्गल शनि या राहु की स्थिति हो, किन्तु वृहस्पति उन्हें न देखता हो तो पाप कर्म के द्वारा सहसा धन की पर्याप्त मात्रा से प्राप्ति सम्भव होगी।

(१०९) यदि लग्न या चौथे भाव में पाँच शुभ ग्रह एक साथ हों तो आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति का प्रबल योग समझिये।

(११०) यदि केन्द्र भावों में उच्चस्थ शुभ ग्रह विद्यमान हों तो यह योग जातक को अत्यन्त धनवान बना देता है।

—×—

12827